



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY  
भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1  
प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 197]

नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर 6, 2013/भाद्र 15, 1935

No. 197]

NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 6, 2013/BHADRA 15, 1935

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 सितम्बर, 2013

प्रारम्भिक जांच परिणाम

विषय :—ईयू, यूएसए और कोरिया आर पी के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'मिथाइलीन क्लोराइड' के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच—प्रारंभिक जांच परिणाम।

फा. सं. 14/19/2012-डीजीएडी.—यतः, निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) को मैसर्स कैम्प्लास सन्मार लिमिटेड और मैसर्स गुजरात फ्लोरोकैमिकल्स लिमिटेड (जिन्हें एतदपश्चात् याचिकाकर्ता या आवेदनकर्ता कहा गया है) से एक आवेदनपत्र यूरोपियन यूनियन, दक्षिण कोरिया और यूएसए (जिन्हें एतदपश्चात् सम्बद्ध देश कहा गया है) से मिथाइलीन क्लोराइड (जिन्हें एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए प्राप्त हुआ है।

यतः, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदनकर्ता द्वारा प्रस्तुत प्रत्याप्त साक्ष्य के आधार पर सम्बद्ध वस्तु के आयातों के सम्बंध में नियमावली के उप-नियम 6(1) के अनुसार, कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा एवं प्रभाव का निर्धारण करने के लिए पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश पर विचार करने के लिए पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 4 अप्रैल, 2013 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी।

## प्रक्रिया

इस जांच के संबंध में निम्नलिखित वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया :

- (1) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले पाटन संबंधी आवेदनपत्र प्राप्त होने के बारे में भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावासों को सूचना प्रेषित की।
- (2) प्राधिकारी ने सम्बद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 4 अप्रैल, 2013 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।

- iii. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनका विवरण आवेदनकर्ता द्वारा उपलब्ध कराया गया था) और उद्योग एसोसिएशनों को अग्रेषित की तथा उन्हें पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।
- iv. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों (जिनका विवरण आवेदनकर्ता द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को भी भेजी और उन्हें इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों के अंदर अपने विचारों से लिखित रूप में अवगत कराने का सुझाव दिया गया।
- v. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार आवेदनपत्र के अगोपनीय पाठ की एक प्रति भारत में संबद्ध देशों के सभी राजदूतावासों तथा ज्ञात निर्यातकों को प्रदान कराई। आवेदनपत्र की एक प्रति अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी उपलब्ध कराई गई।
- vi. प्राधिकारी को कोरिया गणराज्य के राजदूतावास तथा मैसर्स सैमसंग फाइन कैमिकल्स से प्रत्युत्तर प्राप्त हुआ। तथापि, कोरिया के किसी भी निर्यातकर्ता ने निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया।
- vii. प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार सम्बद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रासंगिक जानकारी स्पष्ट करने के लिए प्रश्नावलियां भेजी
  - क. डीओडब्ल्यू कैमिकल्स
  - ख. आईएनईओएस क्लोर लिमिटेड
  - ग. साल्वे एसए
  - घ. आर्किया एसए
  - ङ. आक्सीडेन्टल कैमिकली कारपोरेशन
  - च. डीओडब्ल्यू टैक्सास आपरेशनस
  - छ. सैमसंग फाइन कैमिकल्स
  - ज. ओ सी आई कारपोरेशन

इस प्रश्नावली का प्रत्युत्तर मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बी वी, नीदरलैंड्स और आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी द्वारा दायर किया गया। इसके अतिरिक्त, मैसर्स सैमसंग फाइन कैमिकल्स ने इस जांच शुरुआत अधिसूचना का प्रत्युत्तर दिया। तथापि, इसने कोई भी प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर नहीं किया।

viii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार जरूरी सूचना प्राप्त करने के लिए सम्बद्ध वस्तु के भारत में निम्नलिखित जात आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गईं:

- क. वर्धमान ट्रेडिंग कारपोरेशन
- ख. हर्ष कुमार एंड कंपनी
- ग. रालकैम लिमिटेड
- घ. मार्पियन लैब्स
- ङ. सूर्या मेडिकेयर लिमिटेड
- च. इण्डसोल इग्स लिमिटेड
- छ. मेघमणि आर्गेनिक्स लिमिटेड
- ज. यूनाइटेड फास्फोरस लिमिटेड
- झ. केडीएल बायोटेक लिमिटेड
- ञ. सन फार्मास्युटिकल्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड
- ट. रेल्स इंडिया लिमिटेड
- ठ. एलेम्बिक लिमिटेड
- ड. हिन्दुस्तान कैमिकल्स इंडस्ट्रीज

- ix. किसी भी आयातक/उपभोक्ता ने इस जांच शुरुआत अधिसूचना का प्रत्युत्तर नहीं दिया।
- x. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय पाठ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया।
- xi. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से अनुरोध किया गया कि वह सम्बद्ध वस्तु के विगत तीन वर्षों तथा जांच की अवधि के दौरान हुए आयातों का विवरण उपलब्ध कराने की व्यवस्था करे। डीजीसीआई एंड एस से प्राप्त लेनदेनवार आयात आंकड़ों पर इस जांच परिणाम में प्राधिकारी द्वारा भरोसा किया गया।
- xii. आवेदनकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में सम्बद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और उसका विनिर्माण एवं बिक्री करने की लागत का आकलन पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-3 के अनुसार सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर किया गया जिससे कि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।
- xiii. आवेदनकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का स्थल पर जाकर सत्यापन किया गया इस प्रारंभिक जहांच परिणाम के लिए जरूरी समझी गई सीमा तक किया गया।

- xiv. यह जांच 1 जनवरी, 2012 से प्रारंभ करके 31 दिसम्बर, 2012 (पीओआई) की अवधि के लिए की गई। क्षति विश्लेषण के संबंध में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2009 - मार्च - 2010, अप्रैल, 2010 - मार्च, 2011, अप्रैल, 2011 - मार्च, 2012 तथा जांच की अवधि को कवर किया गया।
- xv. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों का प्राधिकारी द्वारा इस प्रारंभिक जांच परिणाम में संगत समझी गई सीमा तक समाधान कर दिया गया है।
- xvi. \*\*\*इस अधिसूचना में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और नियम के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उस तरह समझी गयी सूचना का प्रतिनिधित्व है।
- xvii. जांच की अवधि के लिए अंगीकृत विनिमय दर 1 अमरीकी डालर = 53.85 रुपया है।

#### ख. विचाराधीन उत्पाद समान वस्तु

##### घरेलू उद्योग के विचार

- 4. मिथाइलीन क्लोराइड एक कार्बनिक यौगिक है जिसका मालिक्युलर फार्मूला  $\text{C}_2\text{H}_2\text{Cl}_2$  है। यह रंगहीन द्रव होता है जिसकी ईंथर जैसी सुगंध होती है और इसका प्रयोग मुख्यतः साल्वेंट के रूप में किया जाता है। यह प्रयोग की अधिकांश परिस्थितियों में अज्वलनशील होता है तथापि ज्यादा गरम किये जाने पर यह आग पकड़ सकता है।
- 5. इस संबद्ध वस्तु के ज्ञात ग्रेड नहीं हैं। तथापि, इसका व्यापार खुले में या पैकेट में किया जा सकता है। और उसके द्वारा इसकी कीमत प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
- 6. मिथाइलीन क्लोराइड को सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय-29 (कार्बनिक रसायन) के अंतर्गत सीमाशुल्क उपशीर्षक 29031200 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और यह वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।
- 7. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु गुणधर्मों जैसे भौतिक एवं रसायनिक गुणधर्म, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, प्रकार्य एवं प्रयोग, उत्पाद एवं विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन और वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरण के रूप में तुलनीय है।

**अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

8. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में किसी भी निर्यातक, आयातक अथवा उपभोक्ता ने कोई विचार प्रस्तुत नहीं किया है।

**प्राधिकारी द्वारा जांच**

9. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद "मिथाइलीन क्लोराइड" है जिसे "डाइक्लोरोमिथेन" और "मिथाइलीन डाइक्लोराइड" (एमडीसी) के रूप में भी जाना जाता है।
10. मिथाइल क्लोराइड एक कार्बनिक यौगिक है जिसका मालिक्युलर फार्मूला  $\text{CH}_2\text{Cl}_2$  है। यह रंगहीन द्रव होता है जिसकी ईंथर जैसी सुंघ होती है और इसका प्रयोग मुख्यतः साल्वेंट के रूप में किया जाता है। यह प्रयोग की अधिकांश परिस्थितियों में अज्वलनशील होता है तथापि ज्यादा गरम किये जाने पर यह आग पकड़ सकता है। मिथाइलीन क्लोराइड को उच्च ताप पर विवंधित किया जा सकता है जिससे विशालु गैस बनती है। विभिन्न विलायको में घुलनशील है। एमडीसी एक विलायक है और इसका प्रयोग पालीकार्बोनेट तथा फिनोलिक रेजिन, रेयान धागा, औषध, कृषि एवं सुंघ का विनिर्माण करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग खाद्य वसा, कोकोआ, बटर और इंसैस के लिए निस्सारक के रूप में भी किया जाता है।
11. मिथाइलीन क्लोराइड का उत्पादन करने के लिए दो प्रौद्योगिकियां हैं- मिथेन रुट और मिथेनौल रुट। दोनों तरीको से उत्पादित उत्पाद के समान तकनीकी विनिर्देशन होते हैं। मिथाइलीन क्लोराइड को मिथाइल क्लोराइड को सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय-29 (कार्बनिक रसायन) के अंतर्गत सीमाशुल्क उपशीर्षक 29031200 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और यह वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।
12. समान वस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) में निम्नलिखित प्रावधान किया गया है:

*"समान वस्तु से आशय उस वस्तु से है जो भारत में पाटित की जा रही जांच के अधीन वस्तु से सभी प्रकार से समान या समरूप हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य वस्तु, जो यद्यपि सभी तरह से समान न हो, फिर भी उसमें जांच की अधीन वस्तु के सभी गुणधर्म निकट से प्रदर्शित होनी चाहिए।"*

13. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई जात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु गुणधर्मों जैसे भौतिक एवं रसायनिक गुणधर्म, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, प्रकार्य एवं प्रयोग, उत्पाद एवं विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन और वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरण के रूप में तुलनीय है। उपभोक्ता दोनों का प्रयोग अदल-बदलकर कर रहे हैं।

#### 14. घरेलू उद्योग और आधार

14. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नवत परिभाषित किया गया है:

“घरेलू उद्योग” का आशय समान वस्तु के विनिर्माण या उससे संबंधित किसी अन्य क्रियाकलाप में समग्र रूप से लगे उन सभी घरेलू उत्पादकों अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के समस्त घरेलू उत्पादन का एक बड़ा अनुपात बनता हो, सिवाय इसके कि यदि ये उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हो पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा उसके स्वयं आयातक हो तो ऐसे मामलों में वाक्यांश “घरेलू उद्योग” को केवल शेष उत्पादकों के रूप में माना जाएगा।

15. यह आवेदन पत्र मैसर्स कैम्प्लास सन्मार लिमिटेड और मैसर्स गुजरात फ्लोरोकैमिकल्स लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से दायर किया गया है। इस उत्पाद के दो अन्य उत्पादक भी हैं, नामशः गुजरात अल्कलाईज एंड कैमिकल्स लिमिटेड और एसआरएफ लिमिटेड। एसआरएफ लिमिटेड ने इस याचिका का समर्थन किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता कुल भारतीय उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन करते हैं। इसके अतिरिक्त याचिकाकर्ताओं का उत्पादन समर्थनकर्ताओं के उत्पादन को शामिल करते हुए कुल भारतीय उत्पादन का 83 प्रतिशत उत्पादन बनता है और इस कारण याचिकाकर्ताओं का उत्पादन भारत में उत्पादित समान उत्पाद के कुल उत्पादन का बहुत बड़ा भाग बनता है। इसके अतिरिक्त, यह भी नोट किया जाता है कि किसी भी याचिकाकर्ता ने विचाराधीन उत्पाद का न तो आयात किया है और न ही वे विचाराधीन उत्पाद के किसी आयातक या निर्यातक से संबंधित हैं। यद्यपि मैसर्स एसआरएफ लिमिटेड ने इस याचिका का समर्थन किया है परंतु कंपनी ने क्षति निर्धारण संगत कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। अतः यह निर्धारित किया जाता है कि यह आवेदन पत्र घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से दायर किया गया है और आवेदनकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत ‘आधार’ की जरूरत को पूरा करते हैं। अतः याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार ‘घरेलू उद्योग’ बनते हैं।

**घ. विविध प्रस्तुतिकरण**  
**घरेलू उद्योग के विचार**

16. घरेलू उद्योग द्वारा किये गये विविध प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं:-

- i. न्यूनतम परीक्षण के प्रयोजनार्थ केवल आयातों की मात्रा पर ही विचार किया जाना अपेक्षित है। निर्यातक देशों के व्यापार आंकड़ों में रिकार्ड किये गये के अनुरूप निर्यात की मात्रा वर्तमान प्रयोजनार्थ पूर्णतया असंगत है। कोरिया से आयात की मात्रा 1811 मी.टन थी जो कुल आयातों का 3.01 प्रतिशत है।
- ii. निर्यातकर्ता देश से किये गये निर्यातों का बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं होता है। यह तो (क) आयातित उत्पाद की पुनर्बिक्री कीमत, (ख) पत्तन पर पड़ी सामग्री की मात्रा और (ग) आयातकों द्वारा प्रस्तुत पुनर्बिक्री कीमत होती है जो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति पर विचार करने के लिए संगत है। अतः भारत में आयातित माल की मात्रा वर्तमान प्रयोजनार्थ प्रासंगिक है।
- iii. चीन से किये गये आयात संबद्ध देशों से किये गये आयातों की तुलना में अधिक कीमत पर किये गये हैं। चीन से आयातों की मात्रा में क्षति अवधि के दौरान तीव्र गिरावट आयी है जबकि कोरिया आरपी से होने वाले आयातों में बढ़ोत्तरी हुई है। तथापि कोरिया से आयात कीमत स्पष्टतः प्रतिबिम्बात्मक और इसने यूरोप और यूएस से आयात कीमत का अनुसरण किया है।

**आयातकों/उपभोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

17. कोरिया सरकार तथा सैमसंग फाइन कैमिकल्स की ओर से किये गये प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं:-

- i. कुल आयातों के अनुपात में कोरिया से किये गये आयात की मात्रा नगण्य है। भारतीय सीमा शुल्क आंकड़ों के अनुसार यह जनवरी- दिसम्बर, 2012 में कुल आयात मात्रा का लगभग 2.5 प्रतिशत बनता है।
- ii. याचिका के अनुसार भी यह हिस्सा कुल आयातों का केवल 3.01 प्रतिशत है जो ईयू और यूएस के हिस्से की तुलना में बहुत कम है और यहां तक की यह उन अन्य देशों के हिस्से की तुलना में भी कम है जो इस जांच का विषय नहीं है। इसलिए पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 5.8 के अनुसार प्राधिकारी को यह जांच तुरंत समाप्त कर देना चाहिए।

- iii. चीन जन.गण से किये गये आयात कुल आयातों का 4 प्रतिशत से अधिक हैं और यह कोरिया के हिस्से से अधिक है परंतु इसे संबद्ध देश के रूप में नहीं माना गया है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

18. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों का प्राधिकारी द्वारा निम्नवत विश्लेषण किया गया है:-
- क. कोरिया और चीन के आयातों के हिस्से के संबंध में दिये गये तर्कों के बारे में यह नोट किया जाता है कि पाटनरोधी नियमावली में यह अपेक्षा की जाती है कि संबद्ध देश से आयात नगण्य मात्रा से अधिक होने चाहिए। यह नोट किया जाता है कि कोरिया आरपी से आयात नगण्य मात्रा से अधिक (3.57 प्रतिशत) हुए हैं और इस कारण यह जांच समाप्त कर दिया जाना अपेक्षित नहीं है। जहां तक चीन जन.गण का संबंध है, इस बारे में यह नोट किया जाता है कि चीन जन.गण से आयात कीमतें बहुत अधिक थीं।

### सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

#### सामान्य मूल्य

19. धारा 9क(1) (ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का आशय:-
- व्यापार के सामान्य अनुक्रम में किसी समान वस्तु की वह तुलनीय कीमत होती है जब वह उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातकर्ता देश में अथवा भू-भाग में, खपत के लिए हो, अथवा
  - निर्यातकर्ता देश अथवा भू-भाग की घरेलू बाजार में उस समान वस्तु की व्यापार के सामान्य अनुक्रम में बिक्री न होती हो, अथवा निर्यातकर्ता देश या उसके भू-भाग की घरेलू बाजार में बिक्री की न्यून मात्रा अथवा किसी खास बाजार स्थिति के कारण जब उक्त बिक्री से समुचित तुलना नहीं हो पाती है तो सामान्य मूल्य,
- (क) जब उक्त वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातकर्ता देश अथवा भू-भाग अथवा किसी अन्य समुचित तृतीय देश से निर्यात किये जाने पर समान वस्तु की प्रतिनिधिक तुलनीय कीमत; अथवा
- (ख) उद्गम के देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत तथा उपधारा(6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत के लिए और लाभ के लिए अलग से तर्क संगत संवर्धन सहित होती है।



20. प्राधिकारही ने संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां यह सुझाव देते हुए भेजी कि वे विहित स्वरूप और ढंग से सूचना प्रदान करायें। तथापि, ईयू के निम्नलिखित उत्पाक और निर्यातक को छोड़कर संबद्ध देशों के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने इस जांच ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दायर करके सहयोग नहीं किया है। निम्नलिखित कंपनियों ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दायर किया है;

- मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, निदरलैंड्स
- मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी

क्योंकि उपर्युक्त कंपनियों ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दायर किया है कि इसलिए इन कंपनियों के बारे में पाटन मार्जिन का निर्धारण उनके द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली प्रत्युत्तर के आधार पर किया गया है।

21. संबद्ध देशों के अन्य आयतकों/निर्यातकों से सहयोग के अभाव में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण, अनंतिम रूप से, करार के अनुच्छेद 6.8 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (8) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है।

22. तदनुसार प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के उत्पादकों/निर्यातकों के बारे में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण अनंतिम रूप से निम्नवत किया है;

**मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, निदरलैंड्स, मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी के मामले में सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत**

23. यह प्रस्तुत किया गया है कि मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, मैसर्स आक्जो नाबेल कैमिकल्स बीवी, निदरलैंड्स की 100 प्रतिशत अनुषंगी कंपनी है। इसके अतिरिक्त यह नोट किया जाता है कि मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, ने मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी के साथ विनिर्माण और बिक्री सेवा करार किया है। विनिर्माण और बिक्री सेवा करार की शर्तों के अनुसार मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, मिथाइलीन क्लोराइड का विनिर्माण करने के लिए अपेक्षित सभी कच्चे माल की आपूर्ति, मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी को (प्राकृतिक गैस और विद्युत के अपवाद सहित) करती है। मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी, मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, निदरलैंड्स के लिए जर्मनी स्थित अपने संयंत्र में मिथाइलीन का विनिर्माण करती है। मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी द्वारा विनिर्माण सेवा प्रदान कराये जाने के लिए यह मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, निदरलैंड्स, से शुल्क प्राप्त करती है। यह भी नोट किया जाता है कि भारत में निर्यातित उत्पाद और अपनी घरेलू बाजार

में बिक्रीकृत उत्पाद सभी तरह से समान उत्पाद है। निर्यातकर्ता ने ईयू की घरेलू बाजार में की गई बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है।

24. पुनः यह नोट किया जाता है कि यह प्रस्तुत किया गया है कि मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, मैसर्स आक्जो नाबेल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स की 100 प्रतिशत अनुषंगी कंपनी है। मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स जीएमबीएच, मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी के लिए जर्मनी स्थित अपने संयंत्र में मिथाइलीन क्लोराइड का उत्पादन करती है। घरेलू बाजार में बिक्री तथा भारत को निर्यात कार्य मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स द्वारा निष्पादित किया जाता है। निर्यातक के प्रत्युत्तर से यह नोट किया जाता है कि मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स ने जांच की अवधि के दौरान भारत को (सभी मात्रा में) संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है। प्रत्युत्तर की प्रारंभिक जांच की गई और निर्यातक को यह पूछते हुए एक त्रुटि पत्र जारी किया गया वे इन त्रुटियों को पूरा करें। तथापि प्रत्युत्तर की जांच करने के पश्चात यह उपयुक्त पाया गया कि उनके प्रत्युत्तर को प्रारंभिक जांच के प्रयोजनार्थ अनंतिम रूप से स्वीकार कर लिया जाए। उनके प्रत्युत्तर के आधार पर यह नोट किया जाता है कि उनकी घरेलू बिक्रियां घरेलू बाजार में ही पर्याप्त मात्रा में हैं (संघ क्षेत्र के आधार पर)। निर्यातक प्रश्नावली के परिशिष्ट-1 में दी गई घरेलू बिक्री संबंधी लेन-देनवार सूचना से यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू बाजार में लाभ अर्जित करने वाली बिक्री की मात्रा 80 प्रतिशत से अधिक है। तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए कुल घरेलू बिक्रियों को संज्ञान में लिया गया है। घरेलू बाजार में बिक्री के लिए निर्यातक द्वारा किये गये समायोजन दावे अर्थात् अंतरदेशीय भाड़ा, डिपो लागत, क्रेडिट लागत और कमीशन की अनुमति अनंतिम आधार पर प्रत्युत्तर के अनुरूप स्थल पर विस्तृत सत्यापन के अध्यधीन दी गई। सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटन मार्जिन तालिका में यथाउल्लिखित के अनुरूप किया गया है।
25. प्रत्युत्तरदाता निर्यातक से भारत को संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत के संबंध में यह नोट किया जाता है कि मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स ने संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात किया है और निर्यातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-2 में सूचना प्रदान करायी है। निर्यातक ने समुद्री भाड़ा, बीमा, कमीशन और क्रेडिट लागत के आधार पर समायोजन का दावा किया है जिसकी प्रारंभिक जांच के प्रयोजनार्थ अनुमति दे दी गई, यह अनुमति विस्तृत स्थल सत्यापन के अध्यधीन दी गई। मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स के लिए यथानिर्धारित निवल निर्यात कीमत पाटन मार्जिन तालिका में दिये गये के अनुसार निर्धारित की गई है।

ईयू के अन्य उत्पादकों तथा निर्यातकों के मामले में सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

26. इस जांच में अन्य निर्यातकों द्वारा सहयोग न दिये जाने के मद्देनजर अन्य निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण निर्यातक आंकड़ों के अनुरूप समायोजन की अनुमति दिये जाने के पश्चात सर्वोत्तम उपलब्ध तथ्यों के आधार पर ईयू से सहयोगकर्ता निर्यातकों की न्यूनतर निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है। सामान्य मूल्य का निर्धारण उसी तरह किया गया है जिस तरह इसका निर्धारण सहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए किया गया। इस तरह निर्धारित निर्यात कीमत की तुलना ईयू के सहयोगकर्ता उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य से की गई। तदनुसार, ईयू से अन्य सभी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण पाटन मार्जिन तालिका में दिये गये के अनुरूप किया गया है। पैकेट में या ड्रम्स निर्यातित संबद्ध वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए उपलब्ध तथ्यों के साथ ड्रम्स की लागत को जोड़ा गया है।

#### यूएसए के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य

27. यह नोट किया जाता है कि यूएसए के किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर देकर प्राधिकारी से सहयोग नहीं किया है। याचिकाकर्ता ने ईयू और यूएसए में सामान्य मूल्य का विवरण आईसीआईएस-एलओआर में यथाप्रकाशित संबद्ध वस्तु की कीमत के आधार पर दिया है। यह नोट किया जाता है कि आईसीआईएस-एलओआर विश्व का सबसे बड़ा पेट्रोकेमिकल्स बाजार सूचना प्रदायक है और यह कीमत निर्धारण संबंधी सूचना प्रदान करने के अपने 30 वर्षों के अनुभव से कीमत निर्धारण आंकड़े, उच्च मूल्य वाली सूचना, विश्लेषण और स्वतंत्र परामर्श प्रदान करता है। संबद्ध निर्यातकों से विहित स्वरूप और ढंग में (आकड़ों को नाबेल को छोड़कर) कोई भी प्रत्युत्तर प्राप्त न होने पर प्राधिकारी ने यूएसए के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के नियम 6 (8) तथा उसके अंतर्गत बने नियमों के अनुरूप अंतिम रूप से किया है। इस तरह निर्धारित सामान्य मूल्य का उल्लेख पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है।

#### कोरिया के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

28. यह नोट किया जाता है कि कोरिया के किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर देकर प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है। याचिकाकर्ता ने ईयू और यूएसए में सामान्य मूल्य का विवरण आईसीआईएस-एलओआर में यथाप्रकाशित संबद्ध वस्तु की कीमत के आधार पर दिया है। तथापि, याचिकाकर्ता ने कोरिया आरपी के लिए आईसी आईएस-एल एलओआर कीमत उपलब्ध नहीं कराई है। यहां तक कि सैमसंग फाइन कैमिकल्स ने प्राधिकारी को प्रत्युत्तर दिया परंतु कंपनी ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दायर नहीं किया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध निर्यातकों से विहित स्वरूप और ढंग में प्रत्युत्तर के अभाव में कोरिया आरपी के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के नियम 6 (8) तथा उसके अंतर्गत बने नियमों के अनुरूप अंतिम रूप से कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय

कीमतों, सर्वोत्तम खपत मापदंड और तर्क संगत नकद मार्जिन को ध्यान में रखकर किया है। इस तरह निर्धारित सामान्य मूल्य का उल्लेख पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है।

### यूएसए और कोरिया के सभी उत्पादको/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

29. यह नोट किया जाता है कि यूएसए और कोरिया के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को प्रत्युत्तर नहीं दिया गया है। यह भी नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने भारत में विचाराधीन उत्पाद के आयातों के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण आपूर्तिकर्ता एजेंसियों के रिपोर्ट किये गये आंकड़ों के अनुसार किया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सूचना पर विचार किया है और भारत में विचाराधीन उत्पाद के सभी आयातों पर विचार करते हुए निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। रिकार्ड में उपलब्ध जानकारी दर्शाती है कि खुले/पैक न किये हुए और पैकेटबंद सामान की कीमत में भारी अंतर है और इसलिए इस उत्पाद के दोनों रूपों के लिए पृथक निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है। प्राधिकारी ने विचार किया है कि आयातित सामग्री जीआई ड्रमों में पैक थी। यूएसए और कोरिया आरपी के निर्यातकों से असहयोग के मद्देनजर याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग द्वारा किये गये दावे के आधार पर कीमत समायोजन किया गया है। निवल निर्यात कीमत का निर्धारण फैक्ट्री बाह्य स्तर पर किया गया है।

### पाटन मार्जिन

30. खुली/बल्क के रूप में पैक की गई और ड्रमों में पैक की गई संबद्ध वस्तु के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का ऊपर किये गये निर्धारण पर विचार करते हुए संबद्ध वस्तु के लिए पाटन मार्जिन निर्धारण निम्नलिखित रूप में किया गया है। यह देखा जाता है कि संबद्ध वस्तु के लिए पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक और पर्याप्त है:-

<u>पाटन मार्जिन</u>		<u>इकाई अमरीकी डालर प्रति किया. में</u>			
विवरण	इकाई	ईयू		यूएसए	कोरिया आरपी
		मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स	अन्य उत्पादक एवं निर्यातक	सभी उत्पादक एवं निर्यातक	सभी उत्पादक एवं निर्यातक

लूज/बल्क					
सामान्य मूल्य	अम.डा./किग्रा	***	***	***	***
निवल निर्यात कीमत	अम.डा./किग्रा	***	***	***	***
पाटन मार्जिन	अम.डा./किग्रा	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	%	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	% रेंज	220-230%	250-260%	300-310%	60-70%
पैकड/ड्रम					
सामान्य मूल्य	अम.डा./किग्रा	-	***	***	***
निवल निर्यात कीमत	अम.डा./किग्रा	-	***	***	***
पाटन मार्जिन	अम.डा./किग्रा	-	***	***	***
पाटन मार्जिन %	%		***	***	***
पाटन मार्जिन %	% रेंज		170-180%	190-200%	70-80%
विचाराधीन उत्पाद संपूर्ण रूप में					
सामान्य मूल्य	अम.डा./किग्रा	***	***	***	***
निवल निर्यात कीमत	अम.डा./किग्रा	***	***	***	***
पाटन मार्जिन	अम.डा./किग्रा	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	%	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	% रेंज	220-230%	230-240%	300-310%	60-70%

### ड. क्षति निर्धारण

#### घरेलू उद्योग के विचार

31. क्षति और कारणात्मक संबंधों के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किये हैं:
- विचाराधीन उत्पाद के आयातों में कई वर्षों से भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई है और यह वृद्धि जांच की अवधि में बहुत अधिक हुई है।
  - भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में आयातों में वृद्धि हुई है।
  - संबद्ध देशों का मांग में बाजार हिस्सा बहुत अधिक बना रहा। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भी वृद्धि हुई है। तथापि यह वृद्धि उसकी क्षमता में वृद्धि के कारण हुई है।

- iv. विदेशी उत्पादकों द्वारा अथवा इन व्यापारियों द्वारा कीमत में कमी करने से भारतीय उत्पादकों को आयातों कीमतों में परिवर्तन या व्यापारियों की पुनर्बिक्री कीमत के अनुरूप अपनी कीमतों में परिवर्तन करना पड़ा अथवा याचिकाकर्ता को अपने आदेश खोने पड़े;
- v. घरेलू उद्योग की कीमतें उन कीमतों के संयुक्त प्रभाव को प्रदर्शित करती हैं जिनकी सूचना व्यापार पत्रिकाओं में दी गई है और जो कीमतें व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत की जा रही हैं।
- vi. खुले और पैकेट बंद दोनों रूपों में आयातित वस्तुएं घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रही हैं। विचाराधीन उत्पाद के संबंध में कीमत अधोरदन संपूर्ण रूप से बहुत अधिक है।
- vii. घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों में तेजी से और अक्सर कमी करने के लिए मजबूर किया गया।
- viii. घरेलू उद्योग वर्ष 2010-11 की अवधि में अच्छा क्षमता उपयोग प्राप्त करने में सक्षम था परंतु उसके पश्चात उसमें गिरावट आई।
- ix. घरेलू उद्योग की मालसूची में 2010-11 में थोड़ी सी गिरावट आई परंतु उसके पश्चात इसमें संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि प्रदर्शित हुई।
- x. लाभ, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में तेजी से बहुत बड़ी सीमा तक गिरावट आई।
- xi. घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में गिरावट बिना किसी न्यायोचित कारण के आयात कीमतों में गिरावट के कारण आई है। यह बहुत अधिक, तीव्र तथा अचानक थी।
- xii. एक अग्रणी बाजार रिपोर्टर ने उल्लेख किया है कि यूरोप के उत्पादकों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि कीमतों में गिरावट आकलित श्रृंखला से भी कम हो गई और भारत मिथाइलीन क्लोराइड का निर्यात करने के लिए सबसे कम कीमत वाला गंतव्य देश था।

### आयातकों/उपभोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

32. क्षति और कारणात्मक संबंधों के बारे में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किये गये हैं:-
  - i. प्राधिकारी को याचिकाकर्ता के यह तर्क स्वीकार नहीं करना चाहिए कि उत्पादन, घरेलू बिक्री और मालसूची को क्षति आकलन के प्रयोजनार्थ असंगत मान लिया जाए। यह कारक सर्वाधिक संगत कारक है और इन पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए।
  - ii. जांच की अवधि के दौरान उत्पादन, घरेलू बिक्री, बाजार हिस्सा, रोजगार, वेतन और उत्पादकता में वृद्धि हुई है इसलिए वास्तविक क्षति का कोई मामला नहीं बनता है।
  - iii. लाभप्रदायकता के संबंध में यह सावधानीपूर्वक जांच की जानी चाहिए कि यह कथित क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है या नहीं। क्षमताओं में वृद्धि भी वित्तीय घाटे का एक कारण हो सकती है।
  - iv. एमडीसी बाजार का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाना चाहिए क्योंकि लाभप्रदायकता में गिरावट एक वैश्विक कारण हो सकता है।

**प्राधिकारी द्वारा जांच**

33. अनुबंध 2 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में प्रावधान है कि क्षति निर्धारण में उन सभी कारकों की जांच की जायेगी जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति का संकेत मिलता हो। "..... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और इन आयातों का इन वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों पर विचार किया जाना चाहिए..... ।" पाटित आयातों का कीमतों पर प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना अनिवार्य माना जाता है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमतों से तुलना करने पर पाटित आयातों द्वारा पर्याप्त कीमत अधोरदन किया गया है या इन आयातों का प्रभाव कीमतों को भारी मात्रा में निग्रहित कर रहा है अथवा कीमतों को बढ़ने से रोक रहा है जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुई होती।
34. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 2 में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में पाटित आयातों का कीमतों पर प्रभाव; और (ख) इन आयातों का समान वस्तु के घरेलू उत्पादकों पर परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच का प्रावधान है। पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत के संगत रूप से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन किया गया है या इन आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों को भारी मात्रा में निग्रहित करता अथवा कीमतों को बढ़ने से रोकता जो अन्यथा भारी मात्रा में बढ़ी होती।
35. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित कीमतों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 2 के पैरा (iv) में निम्नलिखित उल्लेख किया गया है:-
- " संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्यों तथा उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले अन्य सभी कारकों जिसमें बिक्री, लाभ, आउट-पुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता के उपयोग में प्राकृतिक और संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले तथ्यों, पाटन के मार्जिन की वास्तविक मात्रा तथा नकदी प्रवाह पर संभावित नकारात्मक प्रभाव, माल सूची, रोजगार, वेतनवृद्धि, पूंजीनिवेश उगाहने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाना शामिल होगा" ।
36. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी को अनुबंध 2(iv) तथा उसके अधीन बने नियमों के अनुसार उन सभी देशनाकों पर विचार करना होता है जिनका उद्योग पर प्रभाव पड़ता है जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री प्रमात्रा, भंडार, लाभप्रदायकता, निवल बिक्री प्रमाण, पाटन की मात्रा एवं उसका मार्जिन आदि।

**संचयी आकलन**

37. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 2 (iii) में प्रावधान है कि किसी उत्पाद के एक से अधिक ऐसे आयातों के बारे में जो समान रूप से पाटनरोधी जांच के अध्यक्षीन है उनपर निर्दिष्ट प्राधिकारी को इन आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना होता है, यदि यह निम्नलिखित का निर्धारण करता है;
- (क) प्रत्येक देश/भू-भाग से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन का मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का तीन प्रतिशत है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात तीन प्रतिशत से कम है वहां यह आयात समान वस्तु के आयातों का सात प्रतिशत से अधिक आयात बनते हैं, और;
- (ख) आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्त के आलोक में उपयुक्त है।

वर्तमान मामले में,

- (क) प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित की गई सीमा से अधिक है;
- (ख) प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा ऊपर निर्धारित की गई सीमा से अधिक है;
- (ग) आयातों के प्रभावों का संचयी आकलन उपयुक्त है क्योंकि संबद्ध देशों से किये गये निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तु के साथ प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। यह नोट किया जाता है कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने ऐसा प्रस्तुतिकरण नहीं किया है जो वर्तमान मामले में संचयी आकलन का विरोध करता हो।

38. उपयुक्त के आलोक में प्राधिकारी आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उपयुक्त समझते हैं।

**मांग एवं बाजार हिस्सा**

39. संबद्ध वस्तु की घरेलू मांग/खपत का आकलन करने के प्रयोजनार्थ, घरेलू उद्योग तथा भारतीय उत्पादकों की बिक्री मात्रा को भारत में कुल आयातों से जोड़ा गया है और उनका संक्षेप में निम्नलिखित उल्लेख किया गया है।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
घरेलू उद्योग और	मी.टन	51,345	58,050	75,200	89,305



समर्थनकर्ताओं की बिक्री					
अन्य उत्पादकों की बिक्री	मी.टन	19,024	19,134	19,712	19,037
संबद्ध देश-आयात	मी.टन	42,033	55,847	60,975	51,952
अन्य देश-आयात	मी.टन	13,787	10,111	23,469	5,865
कुल मांग/खपत	मी.टन	126,189	143,142	179,356	166,197

40. यह नोट किया जाता है कि मांग में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वर्ष 2011-12 का सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है परंतु जांच की अवधि के दौरान उसमें गिरावट आई है। संबद्ध वस्तु की समग्र मांग में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

च. पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव  
आयात मात्रा और बाजार हिस्सा

41. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में भारत में उत्पादन अथवा खपत के समग्र रूप से या संगत रूप से भारी वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त आयात आकड़ों पर भरोसा किया है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा का विश्लेषण निम्नवत किया गया है:-

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
संबद्ध देश	मी.टन	42,033	55,847	60,975	51,952
ईयू	मी.टन	31,878	32,762	42,418	38,111
यूएसए	मी.टन	9,359	22,499	14,283	5,122
कोरिया आरपी	मी.टन	796	586	4,274	2,064
अन्य देश	मी.टन	13,787	10,111	23,469	5,865
आयातों की कुल मात्रा	मी.टन	55,820	65,958	84,444	57,818
<b>आयातों में बाजार हिस्सा</b>					
संबद्ध देश	%	75.30	84.67	72.21	89.75

अन्य देश	%	24.70	15.33	27.79	10.15
मांग में बाजार हिस्सा					
संबद्ध देश	%	33.31	39.01	34.00	31.27
अन्य देश	%	10.93	7.06	13.09	3.53
घरेलू उद्योग एवं समर्थनकर्ता	%	40.69	40.55	41.93	53.75
अन्य भारतीय उत्पादक	%	15.08	13.37	10.99	11.46
भारतीय उद्योग संपूर्ण रूप से	%	55.76	53.92	52.92	65.20
घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में कुल आयात	%	76.21	77.08	67.80	41.69

42. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों में आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2011-12 तक संपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है परंतु इसमें जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है। समग्र रूप से, संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान मामूली रूप से वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, भारत में कुल आयातों में संबद्ध देशों का हिस्सा बढ़ा है जबकि अन्य देशों के हिस्से में गिरावट आई आई है। यह नोट किया जाता है कि एक घरेलू उत्पादक ने (जो वर्तमान घरेलू उद्योग का एक अंग है) अपनी क्षमताओं में भारी वृद्धि कर ली, जिसकी बजह से घरेलू उत्पाद की उपलब्धता में भारी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप विगत वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के आयातों में कुछ गिरावट आई होती। इसके अतिरिक्त संबद्ध देशों से आयात तथा संबद्ध वस्तु के कुल आयातों में भारत में खपत की तुलना में गिरावट आई होती जो घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता में की गई वृद्धि को प्रदर्शित कर सकती थी।

#### छ. आयातों का कीमत प्रभाव

43. पाटित आयातों का कीमतों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस तथ्य पर विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन किया जा रहा है या क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण कर रहा है अथवा कीमतों को बढ़ने से रोक रहा है जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ होता। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कीमत अधोरदन, कीमत निग्रहण और कीमत अवमंदन, यदि कोई है, के संदर्भ में की गई है।

#### अवधि के दौरान कीमत उद्भव

44. क्षति अवधि में संबद्ध देशों में उद्भवित आयातों की सीआईएफ कीमत निम्नलिखित है:-

संबद्ध देश	आयात कीमत		उतराई कीमत	
	अम.डा./मी.टन	रुपये/किग्रा.	अम.डा./मी.टन	रुपये/किग्रा.
2009-10	477	23.04	509	24.59
2010-11	783	36.15	836	38.59
2011-12	754	36.30	805	38.74
जनवरी, 12- दिसम्बर, 12 (जांच की अवधि)	467	25.16	499	26.85

45. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि संबद्ध वस्तु की सीआईएफ आयात कीमत जो वर्ष 2011-12 में 36.30 रुपये प्रति किग्रा. थी जांच की अवधि में कम होकर 25.16 रुपये प्रति किग्रा. रह गई।

#### कीमत अधोरदन

46. यह निर्धारित करने के उद्देश्य से कि क्या आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे हैं, प्राधिकारी ने आयातों की उतराई कीमत की तुलना घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्रापण से की है।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
<b>ईयू</b>					
आयातों की उतराई कीमत	रुपये/किग्रा.	26.46	39.80	38.39	27.98
निवल बिक्री प्रापण	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	% रेंज	10-20	5-15	0-10	0-10
<b>यूएसए</b>					
आयातों की उतराई कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
निवल बिक्री प्रापण	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	% रेंज	35-45	10-20	नकारात्मक	10-20
<b>कोरिया आरपी</b>					
आयातों की उतराई कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
निवल बिक्री प्रापण	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***	***	***

अधोरदन (%)	% रेंज	नकारात्मक	5-15	नकारात्मक	नकारात्मक
संबद्ध देश संपूर्ण रूप से					
की उतराई कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
बिक्री प्रापण	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
अधोरदन	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
अधोरदन (%)	%	***	***	***	***
अधोरदन (%)	% रेंज	15-25	10-20	0-10	5-15

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है जिससे यह स्पष्ट होता है कि कोरिया आरपी को छोड़कर अन्य संबंध देशों से पाटित आयातों द्वारा भारी मात्रा में कीमत अधोरदन हो रहा है।

#### कोरिया अधोबिक्रयण

48. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा सहन की जा रही कीमत अधोबिक्रयण की जांच भी की है, यह निम्नवत है:-

देश/निर्यातक	यूनिट	ईयू	यूएसए	कोरियाआरपी
गैर क्षतिकारी कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***
उतराई कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***
कीमत अधोबिक्रयण	रुपये/किग्रा.	***	***	***
कीमत अधोबिक्रयण %	%	***	***	***
कीमत अधोबिक्रयण %	% रेंज	45-55	40-50	30-40

उपयुक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण जांच की अवधि के दौरान भारी कीमत अधोबिक्रयण का सामना करना पड़ा है।

#### निग्रहण एवं अवमंदन

49. यह निर्धारित करने के लिए क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों का निग्रहण या अवमंदन हो रहा है और यह कि क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण करना है अथवा यह कीमतों को बढ़ने से वंचित कर रहे हैं जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ

होता, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान कीमतों और लागत में हुए परिवर्तन पर विचार किया है। प्राधिकारी ने इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ खुले और पैकेटबंद सामग्री की औसत कीमत पर विचार किया है। निम्नलिखित तालिका वस्तुपरक स्थिति को दर्शाती है:-

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
आयातों की उतराई कीमत	रुपये/किग्रा.	25.05	39.31	39.46	27.35
बिक्री लागत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	99	112	117
बिक्री कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	139	125	90

51. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है। अतः, घरेलू उद्योग को कीमत निग्रहण का सामना करना पड़ा है।
52. उपर्युक्त तालिका से यह भी नोट किया जाता है कि बिक्री लागत में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई जबकि वर्ष 2010-11 में इसमें मामूली सी गिरावट आई है। बिक्री कीमत में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई है और उसके पश्चात इसमें गिरावट आना प्रारंभ हो गई तथा जांच की अवधि में इसमें भारी गिरावट आई है। यह भी नोट किया जाता है कि उतराई कीमत में विगत वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में तीव्र गिरावट प्रदर्शित हुई है परंतु आधार वर्ष की तुलना में इसमें मामूली सी वृद्धि हुई है। समय रूप से, यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान बिक्री की लागत में भारी वृद्धि हुई है, तथापि, संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में उसी अवधि के दौरान गिरावट आई है। यद्यपि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के उतराई मूल्य में मामूली सी वृद्धि हुई है, यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों का निग्रहण हुआ है।

#### ज घरेलू उद्योग के आर्थिक पैरामीटर

53. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 2 में यह अपेक्षा की जाती है कि क्षति के निर्धारण में इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभावी की उद्देश्यपरक जांच करना अंतर्ग्रस्त होगा। इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभावी के संबंध में पाटनरोधी नियमावली में पुनः यह प्रावधान किया जाता है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक कारकों और उन देशनाकों की उद्देश्यपरक और पक्षपातरहित जांच अंतर्ग्रस्त होगी जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव होता है।

इसमें बिक्री, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर अर्जन अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा; नकदी प्रवाह, मालसूची, रोजगार, वेतन, वृद्धि, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं।

54. घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति पैरामीटरों पर चर्चा निम्नवत की गई है;

I. घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता एवं क्षमता उपयोग

55. घरेलू उद्योग के उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग का उल्लेख निम्नवत किया गया है:-

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
संयंत्र क्षमता	मी.टन	75,750	75,750	117,000	117,000
संयंत्र उत्पादन	मी.टन	73,245	85,566	124,548	138,689
संयंत्र क्षमता उपयोग	%	96.69%	112.96%	106.45%	118.54%
उत्पादन-एमडीसी	मी.टन	35,324	42,422	62,788	73,966
बिक्री मात्रा					
घरेलू	मी.टन	35,191	42,361	60,286	71,338
निर्यात	मी.टन	189	60	2094	2638
कुल बिक्री	मी.टन	35,380	42,421	62,380	73,976

56. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन क्लोरोफार्म और कार्बन टेट्रा क्लोराइड का संयुक्त रूप से सह उत्पाद के रूप में किया जाता है। चूंकि उत्पादन सुविधाएं एक समान हैं और उत्पादों का सह उत्पादन किया जाता है कि इसलिए क्षमता उपयोग की जांच मिथाइलीन क्लोराइड और क्लोरोफार्म का संयुक्त रूप से उत्पादन पर विचार करते हुए की गई है।

57. यह नोट किया गया कि एक याचिकाकर्ता कंपनी ने वर्तमान जांच की अवधि में अपनी क्षमता में वृद्धि कर ली है। घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि उत्पाद की क्षमता में वृद्धि देश में मांग एवं आपूर्ति को ध्यान में रखते हुए की गई तथा कंपनी द्वारा इसमें भारी पूंजीगत निवेश किया गया है। चूंकि घरेलू उद्योग ने अपने क्षमताएं बढ़ा ली हैं इसलिए घरेलू उद्योग ने यह प्रस्तुत किया है कि उत्पादन और घरेलू बिक्री मात्रा में वृद्धि अनिवार्य थी और वह इस क्षमता संवर्धन का परिणाम थी।

58. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री, उत्पादन और क्षमता उपयोग में आधार वर्ष तथा पिछले वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि क्षमता में वृद्धि का यह प्राकृतिक परिणाम होना चाहिए कि कंपनी के लाभ में बढ़ोतरी हो।

## II. बाजार हिस्सा

59. पाटित आयातों का घरेलू उद्योग की बिक्री और बाजार हिस्से पर प्रभाव की निम्नलिखित जांच की गई है:-

	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
मांग में बाजार					
घरेलू उद्योग और समर्थक की बिक्री	%	40.69	40.55	41.93	53.75
अन्य उत्पादकों की बिक्री	%	15.08	13.37	10.99	11.46
संबद्ध देश-आयात	%	33.31	39.01	34.00	31.27
अन्य देश-आयात	%	10.93	7.06	13.09	3.53
कुल	%	100.00	100.00	100.00	100.00

60. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में क्षति अवधि में वृद्धि हुई है।

## iii. लाभ, निवेश पर अर्जन और नकदी प्रवाह

61. घरेलू उद्योग की बिक्री लागत, बिक्री कीमत और लाभ/हानि का विश्लेषण निम्नवत किया गया है:-

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
बिक्री लागत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	99	112	117
बिक्री कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	139	125	90
लाभ/हानि	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***

प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	1,185	443	(605)
लाभ/हानि	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	1,426	759	(1,227)
पीबीआईटी	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	491	290	(275)
नकद लाभ	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	713	433	(464)
आरओआई	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	418	213	(157)

62. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि में बिक्री लागत में वृद्धि हुई है जबकि बिक्री कीमत में वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई और उसके पश्चात इसमें निरंतर गिरावट आनी शुरु हो गई जो जांच जांच की अवधि में सर्वाधिक थी। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ में 2010-11 तक बढ़ोत्तरी हुई और इसके पश्चात इसमें गिरावट आनी शुरु हो गयी। लाभप्रदायकता में उस सीमा तक गिरावट आयी घरेलू उद्योग को जांच की अवधि में भारी वित्तीय घाटा सहन करना पड़ा।

63. लाभ में गिरावट के परिणाम स्वरूप निवेश पर अर्जन और नकदी प्रवाह में आधार वर्ष तथा पिछले वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान भारी गिरावट आई। घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में जांच की अवधि के दौरान भारी कमी आई और इसे नकदी घाटा सहन करना पड़ा तथा जांच की अवधि में निवेश पर अर्जन नकरात्मक रहा।

#### iv. मालसूची

64. संबद्ध वस्तु की मालसूची से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित तालिका में दर्शाये गये हैं: -

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
अथ स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***
इति स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***
औसत स्टॉक	मी.टन	174	137	331	411
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	79	191	236



65. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि जांच की अवधि के दौरान औसत स्टॉक में आधार वर्ष एवं विगत वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई है।

v. रोजगार एवं वेतन

66. रोजगार एवं वेतन से संबंधित स्थिति निम्नलिखित है।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
कर्मचारियों की सं.	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	105	127	134
वेतन	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	96	125	145

67. चूंकि घरेलू उद्योग के पास विचाराधीन उत्पाद के लिए समर्पित रोजगार नहीं होता है इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा संदत्त वेतन और रोजगार के संबंध में घरेलू उद्योग की स्थिति पर कंपनी द्वारा सभी प्रचालनों के लिए उपलब्ध कराई गई जानकारी पर विचार करते हुए जांच की गई। यह देखा जाता है कि इस अवधि में रोजगार एवं वेतन एवं वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

vi. उत्पादकता

68. उत्पादकता से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित हैं:-

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
प्रतिदिन उत्पादकता	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	120	177	209
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	114	140	156

69. यह नोट किया जाता है कि प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में उत्पादकता तथा प्रतिदिन उत्पादकता में क्षति अवधि की तुलना में जांच की अवधि में वृद्धि हुई है।

vii. पाटन का विस्तार

70. पाटन का विस्तार यह संकेत करता है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को किस हद तक क्षति पहुंचाई जा सकती है, यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों के विरुद्ध निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम और पर्याप्त है।

### पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता

71. यह भी नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता कंपनियां बहु उत्पाद कंपनियां हैं और एक याचिकाकर्ता कंपनी ने जांच की अवधि के दौरान अपनी क्षमता में वृद्धि कर ली है। घरेलू उद्योग ने वर्तमान क्षति अवधि के दौरान भारी राशि का निवेश किया है। इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के पाटन ने घरेलू उद्योग की पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव डाला है।

### viii. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

72. संबद्ध देशों से आयात कीमतों, लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा वे अन्य कारक जो घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव डाल रहे हैं, पर विचार यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों से आयातित माल की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और गैर क्षतिकारी कीमत से बहुत कम है जो भारतीय बाजार में भारी कीमत अधोरदन और कीमत अधोबिक्रयण कर रहा है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि घरेलू कीमतों के लिए बेंचमार्क संबद्ध देशों से आयात कीमत है। घरेलू उद्योग ने यह भी तर्क दिया है कि वर्तमान क्षमता संवर्धन के बावजूद देश में अभी भी भारी मांग-आपूर्ति अंतराल है और इसलिए आयात करना अनिवार्य है। तथापि, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि ऐसी स्थिति में जहां आयात अनिवार्य हो, किसी विदेशी उत्पादक को भारतीय बाजार अपने उत्पाद के लिए कीमतों का निग्रहण करने और वह भी भारतीय बाजार में विभेदकारी ढंग करने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता है। घरेलू उद्योग ने इसके आगे यह तर्क दिया है कि बहुत सारे ऐसे बड़े व्यापारी हैं जो अक्रामक ढंग से प्रचालन करते हैं और यह व्यापारी उपभोक्ताओं का आयातित उत्पाद प्रस्तुत कर रहे हैं और इसलिए विदेशी उत्पादकों द्वारा घरेलू उत्पादकों द्वारा कीमतों में कमी से या तो भारतीय उत्पादकों को आयात कीमतों अथवा इन व्यापारियों की पुनर्विक्री कीमत में परिवर्तन के अनुरूप अपनी कीमतें कम करनी चाहिए अथवा याचिकाकर्ताओं के आर्डर समाप्त हो जायेंगे। घरेलू उद्योग ने आगे यह तर्क दिया है कि वह अपनी कीमतों का निर्धारण भारत को निर्यात के लिए व्यापार पत्रिकाओं में रिपोर्ट की जा रही कीमतों, कांदला पत्तन पर माल की माल सूची के आधार पर करता है। अतः घरेलू उद्योग की कीमतें उन कीमतों का जिनकी व्यापार पत्रिकाओं में जानकारी दी गई है और वह कीमत जो व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत की जा रही है के बीच संयुक्त प्रभाव को प्रदर्शित करती है। अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के कोई भारी आयात नहीं किये गये हैं। इस उत्पाद का कोई

अर्थक्षम प्रतिस्थापन भी नहीं है। इस उत्पार के लिए मांग में बढ़ोत्तरी प्रदर्शित हो रही है और यह घरेलू उद्योग द्वारा सामना किये जा रहे कीमत निग्रहण के लिए एक उत्तरदायी कारक नहीं हो सकता है। अतः यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की कीमतों के लिए एकमात्र उत्तरदायी कारक संबद्ध देशों से इस उत्पाद की आयात कीमतें तथा घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत हो सकती है। प्रदान करायी गई जानकारी यह दर्शाती है कि यद्यपि उत्पादन लागत में बढ़ोत्तरी हुई परंतु घरेलू उद्योग की लागत से आयात कीमतें बहुत कम थी जिसके कारण घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की कीमतों का निग्रहण हुआ। इस प्रकार संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है।

#### ix. वृद्धि

73. घरेलू उद्योग की उत्पादन और बिक्री के रूप में सकारात्मक वृद्धि हुई है। तथापि मांग में पर्याप्त वृद्धि होने के बावजूद जांच की अवधि के दौरान लाभ, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन के संबंध में घरेलू उद्योग का विकास नकारात्मक रहा है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि क्षमता में वृद्धि करने से घरेलू उद्योग को भारी लाभ, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में वृद्धि होने की संभावना थी। तथापि, घरेलू उद्योग पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण यह सब हासिल नहीं कर सका।

#### झ. वास्तविक क्षति संबंधी निष्कर्ष

74. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर इसके प्रभाव की जांच करने के पश्चात यह नोट किया जाता है कि यद्यपि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा में क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप से वृद्धि हुई है तथापि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कुल मांग में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की बिक्री, उत्पादन और क्षमता उपयोग जैसे अन्य मात्रा पैरामीटरों की जांच करने के पश्चात अनंतिम रूप से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण मात्रा क्षति नहीं हुई है। तथापि, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण कीमत प्रभाव के संबंध में यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी कीमत अधोरदन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण कीमत निग्रहण का सामना भी करना पड़ रहा है क्योंकि संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। जबकि संबद्ध वस्तु के उत्पादन लागत में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभावी के संबंध में यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री, बाजार हिस्सा के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार

हुआ है कि परंतु लाभ, नकदी प्रवाह , निवेश पर अर्जन और माल सूची के संबंध में इसके निष्पपादन में गिरावट आई है। लाभ, निवेश पर अर्जन और नकदी प्रवाह में गिरावट महत्वपूर्ण एवं बहुत अधिक है। अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

अ. अन्य ज्ञात कारक एवं कारणात्मक संबंध

75. वास्तविक क्षति और घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव की कीमत अधोरदन, अधोबिक्रयण और कीमत निग्रहण, अवमंदन प्रभाव की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने पाटनरोधी करार और भारतीय नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य संकेतात्मक पैरामीटरों की जांच यह जानने के लिए की कि क्या पाटित आयातों के अलावा कोई अन्य ऐसा कारक है जिसने घरेलू उद्योग की क्षति में अपना योगदान दिया हो।

(क) तृतीय देशों से आयातों की मात्रा एवं कीमत

76. यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के अन्य देशों से आयात या तो उच्चतर कीमतों पर हुए हैं या उनके आयातों की मात्रा नगण्य रही है। जहां तक चीन जन.गण.से आयातों का संबंध है, जैसाकि तालिका में दर्शाया गया है, यह नोट किया जाता है कि चीन से आयात कीमत संबंध देशों से आयात कीमत की तुलना में बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त चीन जन.गण से आयातों की मात्रा में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है जबकि प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा में बढ़ने की प्रदर्शित हुई है।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
आयात मात्रा	मी.टन	55,820	65,958	84,444	57,818
संबद्ध देश	मी.टन	42,033	55,847	60,975	51,952
चीन	मी.टन	10,561	5,384	16,084	2,631
अन्य देश	मी.टन	3,226	4,727	7,385	3,235
आयात मात्रा में हिस्सा	%	100	100	100	100
संबद्ध देश	%	75.30	84.67	72.21	89.85
चीन	%	18.92	8.16	19.05	4.55
अन्य देश	%	5.78	7.17	8.75	5.59
आयात कीमत	रुपये/किग्रा.	24.25	36.67	37.90	25.65

संबद्ध देश	रुपये/किग्रा.	23.04	36.15	36.30	25.16
चीन	रुपये/किग्रा.	28.07	39.10	43.92	36.71
अन्य देश	रुपये/किग्रा.	27.47	39.95	38.08	24.60

#### 4. मांग से संकुचन और/ या खपत की प्रणाली में परिवर्तन

1. संपूर्ण अवधि के दौरान संबंधित उत्पाद की मांग में सतत वृद्धि हुई है। मांग में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को क्षति का एक संभव कारण नहीं हो सकता है।

#### प्रौद्योगिकी में विकास एवं निर्यात निष्पादन

2. इस उत्पाद का उत्पादन करने के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और न ही निकट भविष्य में इसमें कोई परिवर्तन होने की संभावना है। अतः, प्रौद्योगिकी में विकास क्षति का एक कारक नहीं हो सकता है।

#### व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएँ और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

3. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया नहीं है जिसने घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति में अपना योगदान दिया हो।

#### घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

घरेलू उद्योग का निर्यात उसकी कुल बिक्री में महत्वहीन हिस्सा है। तथापि, यह उल्लेख किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा जांच की गई क्षति सूचना घरेलू प्रचालनों से संबंधित है और इसलिए निर्यात की मात्रा में संभावित गिरावट से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

#### घरेलू उद्योग की उत्पादकता

यह नोट किया जाता है कि प्रतिकर्मचारी उत्पादन और प्रति दिन उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की इस अवधि के दौरान उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

अतः यह नोट किया जाता है कि सूचीबद्ध अन्य ज्ञात कारक यह प्रदर्शित नहीं करते हैं कि घरेलू उद्योग को इन अन्य कारकों के कारण क्षति हुई होगी। प्राधिकारी ने यह जांच की कि क्या उत्पाद के पाटन ने घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाई है। निम्नलिखित पैरामीटर यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है:

संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी अधोरदन कर रहे थे। इसके परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें भारी मात्रा में कम करने के

लिए मजबूर होना पड़ा। घरेलू उद्योग द्वारा सहन किया गया कीमत निग्रहण कीमत अवमंदन देश में इस उत्पाद के पाटन के कारण ही हुआ है।

(ख) घरेलू उद्योग को अपनी कीमते अपने उत्पादन लागत से भी कम करने को मजबूर किया गया जिससे उससे वित्तीय घाटा हुआ। अतः, आयातों द्वारा कारित कीमत अवमंदन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग लाभ में इस हद तक गिरावट आयी कि उसे भारी वित्तीय घाटा सहन करना पड़ा।

(ग) कीमत अवमंदन के कारण घरेलू उद्योग के लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश पर अर्जन के रूप में निष्पादन में गिरावट आयी है। अतः, इस उत्पाद के पाटन से घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश पर अर्जन के रूप में गिरावट आयी है।

83. अतः, अनंतिम रूप से, यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि, घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण भारी वास्तविक क्षति हुई है।

#### ट. क्षति मार्जिन का परिमाण

##### क्षति मार्जिन

84. निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की गैर क्षतिकारी कीमत की तुलना जांच की अवधि के दौरान क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए संबद्ध देशों से निर्यातों के उतराई मूल्य से की गई। इस तरह निर्धारित क्षति मार्जिन निम्नलिखित है:-

#### क्षति मार्जिन

इकाई अमरीकी डालर में प्रति किग्रा.

देश/निर्यातक	यूनिट	ईयू		यूएसए	कोरिया आरपी
		मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स	अन्य उत्पादक एवं निर्यातक	सभी उत्पादक एवं निर्यातक	सभी उत्पादक एवं निर्यातक
<u>खुला/बल्क</u>					
गैरक्षतिकारी कीमत	अम.डा./किग्रा.	***	***	***	***
उतराई कीमत	अम.डा./किग्रा.	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डा./किग्रा.	***	***	***	***
क्षति मार्जिन %	%	***	***	***	***
क्षति मार्जिन %	% रेंज	60-70%	85-95%	65-75%	30-40%

पैकेटबंद/ड्रैप					
गैरक्षतिकारी कीमत	अम.डा./किग्रा.		***	***	***
उतराई कीमत	अम.डा./किग्रा.		***	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डा./किग्रा.		***	***	***
क्षति मार्जिन %	%		***	***	***
क्षति मार्जिन %	% रेंज		70-80%	30-40%	40-50%
<b>विद्याराधीन उत्पाद संपूर्ण रूप से</b>					
गैरक्षतिकारी कीमत	अम.डा./किग्रा.	***	***	***	***
उतराई कीमत	अम.डा./किग्रा.	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डा./किग्रा.	***	***	***	***
क्षति मार्जिन %	%	***	***	***	***
क्षति मार्जिन %	% रेंज	60-70%	80-90%	70-80%	30-40%

### ठ. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

85. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण भारत में इस उत्पाद के कीमत स्तर को प्रभावित कर सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से पाटन प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ दूर होगा, घरेलू उद्योग को पतन से बचायेगा और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु का व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाये रखने में सहायता करेगा। पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का उपशमन करेगा ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं पक्षपातरहित प्रतिस्पर्धा पुनः स्थापित हो सके जो देश के आम हित में होता है अतः पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से संबद्ध देशों से आयात पर किसी तरह का कोई प्रतिबंध नहीं लगेगा और इसलिए उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता इसकी आपूर्ति के 2 से या उससे अधिक स्रोत अनुरक्षित कर सकते हैं।

### 3. सिफारिश

86. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों और उनमें उठाये गये मुद्दों की जांच करने तथा रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:
- क. विचाराधीन उत्पाद का संबद्ध देशों से भारत को सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर निर्यात किया गया है।
- ख. संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
- ग. यह वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है।
87. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच शुरु की गई और इसे सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया। निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सूचना प्रदान कराने के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया। पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंधों की पाटनरोधी नियमावली में उल्लिखित शर्तों के अनुसार जांच शुरु की गई और इसका आयोजन किया गया तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन और यह सिद्ध हो जाने पर कि घरेलू उद्योग को इन पाटित आयातों से वास्तविक क्षति कारित की गई है, प्राधिकारी का विचार है कि क्षति कारित करने वाले पाटन को दूर करने के लिए पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना अपेक्षित है। घरेलू उद्योग ने उसके द्वारा सहन की जा रही क्षति का निराकरण करने लिए पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने का अनुरोध किया है। प्राधिकारी द्वारा न्यूनतम शुल्क नियम का अनुपालन किए जाने को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के न्यूनतर के बराबर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति दूर की जा सके। क्षतिमार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजन के लिए विचाराधीन उत्पाद के आयातों के उतराई मूल्य की तुलना जांच की अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद की गैर क्षतिकारी कीमत से की गई।
88. प्राधिकारी द्वारा न्यूनतम शुल्क नियम का अनुपालन किए जाने के संबंध में प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के न्यूनतर के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति दूर की जा सके। तदनुसार, अधोलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी अधिसूचना की तारीख से अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं।



## शुल्क तालिका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
क्र. सं.	शीर्षक/ उपशीर्षक	वस्तु का विवरण	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	इकाई	मुद्रा
1	290312	डाइक्लोरोमिथेन (मिथाइलीन क्लोराइड)	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स	मैसर्स आक्जो नाबेल इंडस्ट्रियल कैमिकल्स बीवी, नीदरलैंड्स	0.32	प्रति किग्रा.	अम.डा.
2	- वही -	- वही -	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	क्र.सं.1 में दिये गये संयोजन के अलावा कोई अन्य		0.36	प्रति किग्रा.	अम.डा.
3	- वही -	- वही -	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य	यूरोपियन यूनियन	कोई	कोई	0.36	प्रति किग्रा.	अम.डा.
4	- वही -	- वही -	यूरोपियन यूनियन	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य	कोई	कोई	0.36	प्रति किग्रा.	अम.डा.
5	- वही -	- वही -	संयुक्त राज्य अमेरिका	संयुक्त राज्य अमेरिका	कोई	कोई	0.33	प्रति किग्रा.	अम.डा.
6	- वही -	- वही -	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य	संयुक्त राज्य अमेरिका	कोई	कोई	0.33	प्रति किग्रा.	अम.डा.
7	- वही -	- वही -	संयुक्त राज्य अमेरिका	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य	कोई	कोई	0.33	प्रति किग्रा.	अम.डा.
8	- वही -	- वही -	कोरिया आरपी	कोरिया आरपी	कोई	कोई	0.21	प्रति किग्रा.	अम.डा.
9	- वही -	- वही -	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य	कोरिया आरपी	कोई	कोई	0.21	प्रति किग्रा.	अम.डा.
10	- वही -	- वही -	कोरिया आरपी	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य	कोई	कोई	0.21	प्रति किग्रा.	अम.डा.

**क. अगली प्रक्रिया**

89. इस प्रारंभिक जांच परिणाम को अधिसूचित किये जाने के पश्चात निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया जायेगा:-
- क. प्राधिकारी इस जांच परिणाम के संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियां आमंत्रित करते हैं और उन पर अंतिम जांच परिणाम में विचार किया जायेगा। हितबद्ध पक्षकार इस जांच परिणाम के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के अंदर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं;
- ख. प्राधिकारी जरूरी समझी गयी सीमा तक इसके आगे सत्यापन करेंगे;
- ग. प्राधिकारी अंतिम जांच परिणाम की घोषणा करने से पहले अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन करेंगे।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

**NOTIFICATION**

New Delhi, the 6th September, 2013

**PRELIMINARY FINDINGS**

**Sub: Anti-Dumping Investigation concerning import of "Methylene Chloride" originating in or exported from EU, USA and Korea RP - Preliminary findings.**

**F. No. 14/19/2012-DGAD.**—Whereas the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the Rules, received a written application from M/s Chemplast Sanmar Limited and M/s Gujarat Fluorochemicals Ltd. (hereinafter also referred to as petitioners or applicants) alleging dumping of Methylene Chloride (hereinafter referred to as subject goods) from European Union, South Korea and USA (hereinafter referred to as subject countries).

2. Whereas the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 4<sup>th</sup> April, 2013 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with the sub-Rule 6(1) of the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to consider recommendation of the anti-dumping duty.

**A. PROCEDURE**

3. The following Procedure described below has been followed with regard to this investigation:
- The Authority notified the embassies of the subject countries in India about the receipt of dumping application before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Anti-dumping Rules.
  - The Authority issued a public notice dated 4<sup>th</sup> April, 2013, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.
  - The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the Applicant) and industry associations and

gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the Anti-dumping Rules.

- iv. The Authority also forwarded a copy of the public notice to all the known importers of the subject goods in India (whose details were made available by the Applicant) and advised them to make their views in writing within forty days from the date of the letter.
- v. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and the embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) of the Anti-dumping Rules. A copy of the Application was also made available other interested parties, upon request.
- vi. The Authority received a response from the embassy of Republic of Korea and M/s Samsung Fine Chemicals. However none of the exporters from the Korea have submitted any response to the exporters questionnaire.
- vii. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:
  - a. DOW Chemicals
  - b. INEOS Chlor Limited
  - c. Solvay SA
  - d. Arkema SA
  - e. Occidental Chemical Corporation
  - f. Dow Texas Operations
  - g. Samsung Fine Chemicals
  - h. OCI Corporation

Response to questionnaire was filed by M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V., Netherlands and Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH, Germany. Further, M/s Samsung Fine Chemicals responded to the initiation notification. However, it did not file any questionnaire response.

- viii. Questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:
  - a. Vardhaman Trading Corporation
  - b. Harsh Kumar & Company
  - c. Ralchem Limited
  - d. Morpean LABS
  - e. Surya Medicare Limited
  - f. Indsol Drugs Limited
  - g. Meghmani Organics Limited
  - h. United Phosphorus Limited
  - i. KDL Biotech Limited
  - j. Sun Pharmaceuticals Industries Limited

- k. Rails India Limited
  - l. Alembic Limited
  - m. Hindustan Chemicals Industries
- ix. None of the importers/consumers responded to the initiation notification.
- x. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xi. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of the subject goods for the past three years, including the period of investigation. The transaction wise import data received from the DGCI&S has been relied upon by the Authority in this finding.
- xii. The cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out in accordance with Annexure III of the anti dumping rules so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xiii. On the spot verification of the information provided by the applicants was carried out to the extent considered necessary for the preliminary findings.
- xiv. Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> January 2012 to 31<sup>st</sup> December 2012 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period from April 2009-March 2010, April 2010-March 2011 April, April 2011-March 2012 and the POI.
- xv. The submissions made by the interested parties considered relevant by the Authority have been addressed in this preliminary finding.
- xvi. \*\*\* in this Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xvii. The exchange rate adopted for the POI is 1 US \$ =Rs 53.85

## **B. Product Under Consideration and Like Article**

### **Views of the Domestic Industry**

4. Methylene chloride is an organic compound with molecular formula  $\text{CH}_2\text{Cl}_2$ . It is a colorless liquid with sweetish ether-like odor, and is used as a solvent, predominantly. It is essentially non-flammable under most conditions of use, however, can burn if strongly heated.
5. There are no known grades of the subject good. However, it can be traded in loose or packed, thereby, having direct effect on prices.

6. Methylene Chloride is classified under Chapter 29 (Organic Chemical) of the Customs Tariff Act under customs subheading 29031200. The Customs classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.
7. There is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods.

#### **Views of the other interested parties**

8. None of the exporters, importers or consumers has offered any views with regard to product under consideration.

#### **Examination of the Authority**

9. The product under consideration for the purpose of present investigation is "Methylene Chloride" also known as "Dichloromethane" and "Methylene Dichloride" (MDC).
10. Methylene chloride is an organic compound with molecular formula  $\text{CH}_2\text{Cl}_2$ . It is a colorless liquid with sweetish ether-like odor, and is used as a solvent, predominantly. It is essentially non-flammable under most conditions of use, however, can burn if strongly heated. Methylene chloride may decompose at high temperatures forming toxic gases. It is completely miscible with a variety of solvents. MDC is a solvent and is used in the manufacturing of polycarbonate and phenolic resins, rayon yarn, pharmaceuticals, agro and fragrance. It is also used as an extractant for edible fats, cocoa, butter and essences.
11. There are two technologies for production of Methylene Chloride - Methane route and Methanol route. The product produced through the two routes has essentially similar technical specifications. Methylene Chloride is classified under Chapter 29 (Organic Chemical) of the Customs Tariff Act under customs subheading 29031200. The Customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.
12. With regard to like article, Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules provides as under:

*"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."*
13. After considering the information on record, the Authority has determined that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from subject countries are comparable in

terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods. The consumers are using the two interchangeably.

#### **2. Domestic Industry and Standing**

15. Rule 2(b) of the AD Rules defines domestic industry as under: -

*"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers"*

16. The Application has been jointly filed by M/s. Chemplast Sanmar Ltd. and M/s Gujarat Fluorochemicals Ltd. There are two other producers, namely Gujarat Alkalies & Chemicals Limited and SRF Ltd. SRF Ltd has supported the petition. The Authority notes that the petitioners account for more than 50% of the total Indian production. Further, production of the petitioners including supporter constitutes 83% of Indian productions and therefore production by the petitioners constitutes a major proportion in total production of the like product produced in India. It is further noted that none of petitioners have imported the product under consideration, nor they are related to an importer or exporter of the product under consideration. While M/s. SRF Ltd. has supported the petition, the company has not provided information relevant to injury determination. It is thus determined that the application has been made by or on behalf of the domestic industry and the application satisfies the requirements of 'standing' under Rule 5 of the AD Rules. Therefore, the petitioners constitute 'Domestic Industry' in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.

#### **2. Miscellaneous Submissions**

##### **Views of the Domestic Industry**

16. Miscellaneous submissions made by the domestic industry are as follows:

- i. It is volume of imports that alone is required to be considered for the purposes of de-minimis test. Volume of exports as recorded in the exporting country's trade data is entirely irrelevant for the present purposes. The volumes of imports from Korea were 1811 MT which constituted 3.01 % of total imports
- ii. Exports made from the exporting country do not have direct impact on the price of the domestic industry in the market. It is the (a) resale price of the imported product, (b) volume of material lying at the port and (c) the resale price offered by the importers which are relevant for considering injury to the domestic industry.

Therefore, it is the volume of material imported into India that is relevant for the present purposes.

- iii. Imports from China are at a price higher than imports from subject countries. Volume of imports from China has steeply declined over the injury period, whereas the volume of imports from Korea RP has increased. Import price from Korea is however clearly reflective and has followed the import price from Europe and US.

#### **View of the Importers/consumers and other interested parties**

17. Submissions made on behalf of Govt. of Korea and Samasung Fine Chemicals are as follows:
  - i. Import volume from Korea is negligible in proportion to total imports. It composed about 2.5% of the total import volume in January – December, 2012 as per Indian customs data.
  - ii. Even according to petition the share is 3.01% of total imports much lower than the share of EU and US and even lower than the share of other countries not subject to investigation. Therefore according to Article 5.8 of AD Agreement, the Authority should immediately terminate the investigation.
  - iii. Imports from China PR is above 4% of total imports and is more than the share of Korea but it has not been considered as the subject country.

#### **Examination by Authority**

18. The submissions made by the interested parties have been analysed by the Authority as follows:
  - a. With regard to the argument on share of imports of Korea and China, it is noted that the Anti dumping Rules requires that the imports from the subject country should be more than negligible volume. It is noted that imports from Korea RP were above negligible volume (3.57%) and therefore investigation is not required to be terminated on this account. As regards China PR, it is noted that the import prices from China PR were much higher.

#### **Normal Value, Export Price and Dumping Margin**

##### **Normal value**

19. Under section 9A (1) (c) normal value in relation to an article means:
  - (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or
  - (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either

(a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

20. The Authority sent questionnaires to the known exporters from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. However, barring below mentioned producer and exporter from EU, none of the producer/exporter from subject countries have co-operated in this investigation by filing their Questionnaires' responses. The questionnaire response has been filed by the following companies

- M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V., Netherlands
- Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH, Germany

Since the above mentioned companies have filed questionnaire response, dumping margin has been determined in respect of these companies on the basis of their questionnaire response.

21. In the absence of cooperation from the other producers/exporters in subject countries, the Authority has determines normal value, provisionally, on the basis of facts available in terms of Rule 6 (8) of AD Rules read with Article 6.8 of the Agreement.
22. Accordingly, the Authority has provisionally determined normal value, export price and dumping margin in respect of producers/exporters of the subject countries as follows.

**Normal value and Export price in case of M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V., Netherlands and M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH, Germany**

23. It has been submitted that M/s Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V. is a 100% subsidiary of Akzo Nobel Chemicals B.V., The Netherlands. Further, it is noted that M/s Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V. has entered into a Manufacturing & Sales Services Agreement with Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH, Germany. In terms of the Manufacturing & Sales Services Agreement, Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V. supplies all the raw materials required for manufacturing methylene chloride to Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH, Germany (with the exception of natural gas and electricity). Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH manufactures methylene chloride for Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V. in its plant in Germany. For the manufacturing services rendered by Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH, it receives a fee from Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V. It is also noted from the response that the product exported to India and sold in the home market is same in all respects. The exporter has claimed normal value based on sales made in the home market in EU.



24. It is further noted that M/s Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH is a 100% subsidiary of Akzo Nobel Chemicals Holding GmbH, Germany. Akzo Nobel Industrial Chemicals GmbH manufactures methylene chloride for Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V. in its plant in Germany. Sales in home market as well as exports to India are performed by Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V., Netherlands. From the exporters response, it is noted that M/s Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V., Netherlands has exported the subject goods (all bulk ) to India during the POI. A preliminary examination of response was carried out and a deficiency letter has been issued to the exporter asking them to comply with the deficiency. However, after examination of the response, it is considered appropriate to provisionally accept their response for the purpose of preliminary findings. Based on their response, it is noted that their domestic sales are in sufficient quantity in the domestic market (based on EU territory as a whole). It is also noted from the transaction wise information of domestic sales given in appendix 1 of the exporters questionnaire that the profit making sales in the domestic market are more than 80 % by the way of volume. Accordingly the total domestic sales have been taken into account for the purpose of determination of normal value. The adjustments claims by the exporter for sales in the domestic market i.e. inland freight, depot costs, credit costs and commissions have been allowed as per the response on the provisional basis subject to detailed on site verification. The normal value as determined is mentioned in the dumping margin table.

25. With regards to export price of subject goods from responding exporter to India, it is noted that M/s Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V., Netherlands has exported the subject goods to India and has given the information in the appendix 2 of the response of the exporters' questionnaire. The exporter has claimed adjustments on account of ocean freight, insurance, commissions and credit costs which have been allowed for the purpose of preliminary findings subject to detailed onsite verification. The net export price as determined for Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V., Netherlands is given in the dumping margin table.

#### **Normal value and Export price in case of other producers and exporters from EU**

26. In view of the non cooperation of other exporters in this investigations, the Export price for other exporters has been determined based on the lower export price of the cooperating exporter from EU as best facts available after allowing for adjustments as per exporters data. The normal value has been determined as same for the cooperating exporter. The export price so determined has been compared with the normal value determined for cooperating producer and exporter from EU. Accordingly, export price and dumping margin for all other exporters from EU has been worked out as mentioned in the dumping margin table. With regard to subject goods exported in packed or in drums, the cost of the drums as per the facts available have been added to determine the normal value and export price.

#### **Normal value in case of all producers/exporters in USA.**

It is noted that none of the exporters in USA have cooperated with the authority with questionnaires received. The petitioner had provided details of normal value in EU and

USA on the basis of price of subject goods as published in ICIS-LOR. It is noted that ICIS-LOR is the world's largest petrochemical market information provider and provides pricing data, high-value news, analysis and independent consulting, with over 30 years' experience of providing pricing information. In the absence of any response from the subject exporters (barring Akzo Nobel) in the form and manner prescribed, the Authority has provisionally determined normal value for all producers/exporters in USA in accordance with Rule 6(8) supra. The normal value so determined is mentioned in the dumping margin table.

#### **Normal value in case of all producers/exporters in Korea**

28. It is noted that none of the exporters in Korea have cooperated with the authority with questionnaire response. The petitioner had provided details of normal value in EU and USA on the basis of price of subject goods as published in ICIS-LOR. However, the petitioner has not made available ICIS-LOR price for Korea RP. Even though Samsung Fine Chemicals responded to the authority, the company has not filed response to questionnaire. The Authority notes that in the absence of any response from the subject exporters in the form and manner prescribed, the Authority has provisionally constructed the normal value for all producers/exporters in Korea RP in accordance with Rule 6(8) supra i.e by taking into account international raw material price, best consumption norm and reasonable profit margin. The normal value so determined is mentioned in the dumping margin table.

#### **Export price for all producers/exporters in USA and Korea**

29. It is noted that none of the exporters from USA and Korea have responded to the authority. It is also noted that the Petitioner has determined export price on the basis of imports of the product under consideration in India, as reported by data supplying agencies. The Designated Authority has considered information received from the DGCI&S and has determined export price considering all imports of the product under consideration in India. Information on record shows that there is significant difference in the price of loose/unpacked and packed material and therefore, separate export price has been determined for the two form of the product. The Authority has considered that the imported product was packed in GI drums. Price adjustments have been made on the basis of claims made by petitioner domestic industry in view of non cooperation from the exporters from USA and Korea RP. The net export price has been determined at ex-factory level.

#### **DUMPING MARGIN**

30. Considering the normal value and export price for subject goods packed as loose/bulk, and drums as determined above, the dumping margin for the subject goods as a whole has

been determined as follows. It is seen that the dumping margin for the subject goods is more than de-minimus and significant.

<b><u>Dumping Margin</u></b>	<b><u>Unit in US\$ per Kg</u></b>				
Particular	Unit	EU		USA	Korea RP
		M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V, Netherlands.	Other Producers and Exporters	All producers and exporters	All producers and exporters
<b><u>Loose/Bulk</u></b>					
Normal Value	US\$/kg	***	***	***	***
Net Export Price	US\$/kg	***	***	***	***
Dumping Margin	US\$/kg	***	***	***	***
Dumping Margin %	%	***	***	***	***
Dumping Margin %	% Range	220-230%	250-260%	300-310%	60-70%
<b><u>Packed/Drum</u></b>					
Normal Value	US\$/kg	-	***	***	***
Net Export Price	US\$/kg	-	***	***	***
Dumping Margin	US\$/kg	-	***	***	***
Dumping Margin %	%		***	***	***
Dumping Margin %	% Range		170-180%	190-200%	70-80%
<b><u>Product under consideration as a whole</u></b>					
Normal Value	US\$/kg	***	***	***	***
Net Export Price	US\$/kg	***	***	***	***

Dumping Margin	US\$/kg	***	***	***	***
Dumping Margin %	%	***	***	***	***
Dumping Margin %	% Range	220-230%	230-240%	300-310%	60-70%

### **E. Injury Determination**

#### **Views of the Domestic Industry**

31. The submissions made by domestic industry with regard to injury and casual link are as follows:
- i. Imports of the product under consideration have shown significant increase over the years with a significant increase in POI;
  - ii. Imports have increased in relation to production and consumption in India;
  - iii. Market share of the subject countries in demand has remained significant. Market share of the domestic industry has also increased. The same is however due to significant addition to the capacities;
  - iv. With reduction in the prices either by the foreign producers or by these traders, either the Indian producers must realign their prices with the changes in the import prices or traders' resale prices, or the petitioners must loose orders;
  - v. domestic industry prices reflect the combined effect of the prices which have been reported in the trade journals and the prices that are being offered by the traders;
  - vi. imported goods have been undercutting the prices of the domestic industry in both loose and packed form. Price undercutting in respect of the product under consideration as a whole is quite significant;
  - vii. the domestic industry has been forced to reduce the prices too steeply and too frequently;
  - viii. The domestic industry was able to achieve good capacity utilization in the period 2010-11, but the same declined thereafter;
  - ix. Inventories with the domestic industry decreased slightly in 2010-11, but, have thereafter shown increase throughout the injury period;
  - x. Performance of the domestic industry has steeply deteriorated in terms of profits, return on investments and cash profits to a very significant extent;
  - xi. The decline in profitability of the domestic industry was due to reduction in the import prices without any justifiable reasons. Further, the decline in price and consequent profit was not inconsequential. It was too significant, too steep and too sudden;
  - xii. A leading market reporter stated that European producers conceded that the prices fell below the assessed range of the Journal, with India being one of the lower-priced destinations for methylene chloride exports.

#### **View of the Importers/consumers and other interested parties**

32. The submissions made by the interested parties with regard to injury and casual link are as follows:

- i. Authority should not accept the petitioner's argument that production, domestic sales and inventories must be considered irrelevant for the purpose of assessing injury. These factors are most relevant and should be carefully reviewed.
- ii. Production, domestic sales, market share, employment, wages and productivity all increased during POI, therefore there is no case of material injury.
- iii. As regards, profitability careful investigation should be made of whether this alleged injury is on account of dumped imports or not. Enhancement of capacities may be the reason for the financial losses.
- iv. Careful analysis should be done of the MDC market as decline in profitability may be a global phenomenon.

#### Examination by the Authority

13. Rule 11 of the AD Rules read with its Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, "...taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." While considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
14. Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.
15. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows:

*"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories.*

*employment wages growth, ability to raise capital investments."*

36. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules supra.

### Cumulative Assessment

37. Annexure II (iii) of the Anti Dumping Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that: -
- the margin of dumping established in relation to the imports from each country/ territory is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
  - cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

In the present case,

- the margin of dumping from each of the subject countries is more than the limits prescribed above;
  - the volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed;
  - cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market. It is noted that there is no submission made by any interested party disputing cumulative assessment in the present case.
38. In view of the above, the authority considers it appropriate to cumulatively assess the effects of imports.

### Demand and market share

39. For the purpose of assessment of the domestic consumption/demand of the subject goods, the sales volume of domestic industry and other Indian producers have been added to the total imports into India and the same has been summarized below:

Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Sales of Domestic Industry and Supporter	MT	51,345	58,050	75,200	89,305
Sales of Other Producers	MT	19,024	19,134	19,712	19,037

Subject countries-Imports	MT	42,033	55,847	60,975	51,952
Other Countries-Imports	MT	13,787	10,111	23,469	5,866
Total demand/consumption	MT	126,189	143,142	179,356	166,160

40. It is noted that the demand has shown a positive trend throughout the injury period till 2011-12, but the same has declined during the POI. Overall, demand of the subject goods has increased during the injury period.

#### F. Volume Effects of Dumped Imports

##### Import Volume and Market Share

41. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied on the import data procured from DGCI&S. The volume of imports of the subject good from the subject countries have been analyzed as under:

Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Subject Countries	MT	42,033	55,847	60,975	51,952
EU	MT	31,878	32,762	42,418	38,002
USA	MT	9,359	22,499	14,283	11,886
Korea RP	MT	796	586	4,274	2,064
Other Countries	MT	13,787	10,111	23,469	5,866
Total Imports Volume	MT	55,820	65,958	84,444	57,818
<b>Market share in Imports</b>					
Subject Countries	%	75.30	84.67	72.21	89.85
Other Countries	%	24.70	15.33	27.79	10.15
<b>Market share in demand</b>					
Subject Countries	%	33.31	39.01	34.00	31.27
Other Countries	%	10.93	7.06	13.09	3.53
Domestic industry & Supporter	%	40.69	40.55	41.93	53.75
Other Indian producers	%	15.08	13.37	10.99	11.46
Indian industry as a whole	%	55.76	53.92	52.92	65.20
Total Imports in relation to production of domestic industry	%	76.21	77.08	67.80	41.69

42. It is noted from the above table that imports of the subject goods from subject countries have increased in absolute terms from the base year till 2011-12, but the same has declined during the POI. Overall, the volume of the imports of subject goods have marginally increased during the POI as compared to the base year. Further, the share of

the subject countries in total imports into India has increased whereas the share of other countries has declined. It is noted that one of the domestic producer (who is part of the present domestic industry) enhanced capacities significantly, which has led to significant increase in availability of domestic product. This could have resulted in some decline in the imports of the subject goods in the POI as compared to previous years. Further, the imports from subject countries as well as total imports of subject goods have declined in relation to consumption in India, which may be the reflective of additions of capacities by the domestic industry.

## **G. Price effect of imports**

With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price suppression and price depression, if any.

### **Evolution of prices over the period**

46. In the injury period, average CIF prices of the imports originated in subject countries have been as under:

Subject Country	Import price		Landed Price	
	US\$/MT	Rs./kg	US\$/MT	Rs./kg
2009-10	477	23.04	509	24.59
2010-11	783	36.15	836	38.59
2011-12	754	36.30	805	38.74
Jan'12-Dec'12 (POI)	467	25.16	499	26.85

47. It is seen from the above table that the CIF import price of subject goods declined from Rs. 36.30 Per/Kg. in 2011-12 to Rs. 25.16 in POI.

### **Price undercutting**

48. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
EU					
Landed price of imports	Rs./Kg	26.46	39.80	38.39	27.98



Net Sales Realisation	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	% Range	10-20	5-15	0-10	0-10
<b>USA</b>					
Landed price of imports	Rs./Kg	***	***	***	***
Net Sales Realisation	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	% Range	35-45	10-20	Negative	10-20
<b>Korea RP</b>					
Landed price of imports	Rs./Kg	***	***	***	***
Net Sales Realisation	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	% Range	Negative	5-15	Negative	Negative
<b>Subject Countries as a whole</b>					
Landed price of imports	Rs./Kg	***	***	***	***
Net Sales Realisation	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./Kg	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	% Range	15-25	10-20	0-10	5-15

47. The Authority notes that the landed prices of the subject goods were below the selling price of the domestic industry showing significant price undercutting being caused by the dumped imports from subject countries except Korea RP.

#### **Price-underselling**

48. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject countries, as follows:

3864 GI/13-7

Country/exporter	Unit	EU	USA	Korea RP
Non Injurious Price	Rs./kg	***	***	***
Landed Price	Rs./kg	***	***	***
Price underselling	Rs./kg	***	***	***
Price underselling %	%	***	***	***
Price underselling %	% Range	45-55	40-50	30-40

49. It is noted from the above table that the domestic industry has suffered significant price underselling during the investigation period on account of imports of the subject goods from the subject countries.

#### **Price suppression and depression**

50. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. Authority has considered the average price of loose and packed material for the purpose of this analysis. Table below shows the factual position:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Landed price of imports	Rs./Kg	25.05	39.31	39.46	27.35
Cost of Sales	Rs./Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>99</i>	<i>112</i>	<i>117</i>
Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>139</i>	<i>125</i>	<i>90</i>

51. The selling prices of the subject good in the domestic market have declined during the injury period. Thus, the domestic industry has suffered a price depression.
52. It is also noted from the table above that the cost of sales has increased the injury period except that it marginally declined in 2010-11. The selling price increased till 2010-11 but started declining thereafter and has declined significantly in the POI. It is also noted that the landed price shows a sharp decline in the POI as compared to the previous year but the

same has marginally increased as compared to the base year. Overall, it is noted that cost of sales have increased significantly during the injury period, however, the selling price of the domestic like product declined during the same period. Though there is a marginal increase in landed value of the subject goods from subject countries, it is noted that the dumped imports of subject goods from subject countries have suppressed the domestic industry prices.

#### **H. Economic parameters of the domestic industry**

53. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

54. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed herein below:

#### **i. Production, capacity and capacity utilization of the Domestic Industry**

55. The production, domestic sales, capacity & capacity utilization of the domestic industry has been stated as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Plant Capacity	MT	75,750	75,750	117,000	117,000
Plant Production	MT	73,245	85,566	124,548	138,689
Plant Capacity Utilization	%	96.69%	112.96%	106.45%	118.54%
Production-MDC	MT	35,324	42,422	62,788	73,966
Sales volume					
Domestic	MT	35,191	42,361	60,286	71,338
Exports	MT	189	60	2094	2638
Total Sales	MT	35,380	42,421	62,380	73,976

56. The Authority notes that the product under consideration is jointly produced with Chloroform and Carbon Tetrachloride comes out as a byproduct. Since the production facilities are common and the products are coproduced, capacity utilization has been examined by considering combined production of Methylene chloride and chloroform.

57. It is noted that one of the petitioner companies has enhanced capacity within the present injury period. The domestic industry has submitted that the capacity enhancement in the product was made in view of the demand-supply gap in the Country and the investment involved significant capital expenditure by the company. Since the domestic industry enhanced capacities, the domestic industry submitted that the increase in production and domestic sales volumes was an inevitable and a result of such capacity enhancement.
58. It is noted from the above table that the domestic sales, production and capacity utilization of the domestic industry has increased during POI as compared to the base year as well as the previous year. The domestic industry has contended that a natural outcome of increase in capacities should have been higher profits to the company.

**ii. Market share**

59. The effects of the dumped imports on the domestic sales and the market share of the domestic industry have been examined as below:

	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
<b>Market Share in Demand</b>					
Sales of Domestic Industry & Supporter	%	40.69	40.55	41.93	53.75
Sales of Other Producers	%	15.08	13.37	10.99	11.46
Subject countries-Imports	%	33.31	39.01	34.00	31.27
Other Countries-Imports	%	10.93	7.06	13.09	3.53
<b>Total</b>	%	100.00	100.00	100.00	100.00

60. It is noted that market share of the domestic industry has increased over the injury period.

**iii. Profits, return on investment and cash flow**

61. The cost of sales, selling price and profit/loss of the domestic industry has been analysed as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Cost of sales	Rs./Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	99	112	117
Selling price	Rs./Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	139	125	90
Profit/Loss	Rs./Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	1,185	443	(605)

Profit/Loss	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	1,426	759	(1,227)
PBIT	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	491	290	(275)
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	713	433	(464)
ROI	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	418	213	(157)

62. It is noted from the above table that the costs of sales have increased over the injury period, where as the selling price increased in 2010-11 and declined consistently thereafter with steep decline in the POI. Resultantly, the profits of the domestic industry increased up to 2010-2011 and started declining thereafter. Profitability declined to such an extent that the domestic industry suffered significant financial losses in the POI.
63. As a result of decline in profits, the return on investment and cash profits declined significantly during POI as compared to the base year as well as previous year. The profitability of domestic industry has declined significantly during the POI and it has suffered cash losses and negative return on investment in the POI.

#### iv. Inventories

64. The data relating to inventory of the subject goods are shown in the following table:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Opening stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	174	137	331	411
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	79	191	236

65. It is noted from the above table that the average stock during POI has increased as compared to the base year as well as the previous year.

#### v. Employment and wages

66. The position with regard to employment and wages is as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Number of employees	No.	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>105</i>	<i>127</i>	<i>134</i>
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>96</i>	<i>125</i>	<i>145</i>

67. Since the domestic industry does not have dedicated employment for the product under consideration, situation of the domestic industry with regard to employment and wages paid by the domestic industry was examined by considering information for the company for all operations. It is seen that both employment and wages shows increase over the period.

**vi. Productivity**

68. Data relating to productivity shows as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Productivity per day	No.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>120</i>	<i>177</i>	<i>209</i>
Productivity per Employee	No.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>114</i>	<i>140</i>	<i>156</i>

69. It is noted that productivity in terms of production per employee as well as production per day has increased in the POI over the injury period.

**vii. Magnitude of Dumping**

70. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margin determined against the subject countries are above de minimis and significant.

**Ability to raise capital investment**

71. It is also noted that the petitioner companies are multi product companies and one of petitioner companies has enhanced capacities during the injury period. The domestic industry has invested significant amount during the current injury period. It is thus noted that dumping of the product under consideration has not adversely impacted the ability of the domestic industry to raise capital investment.

**viii. Factors affecting domestic prices**

72. Consideration the import prices from subject countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market show that the landed value of imported material from subject countries are significantly below the selling price and non injurious price of the domestic industry, causing significant price undercutting and underselling in the Indian market. The domestic industry contended that benchmark for the domestic prices are the import prices from subject countries. The domestic industry also contended that despite the present capacity enhancement, there is still significant demand-supply gap in the Country and therefore imports are inevitable.. The domestic industry however contended that in a situation where the imports are inevitable, there is no reason for the foreign producers to depress the prices for the product in the Indian market, that too discriminately for the Indian market. The domestic industry further contended that there are large scale traders aggressively operating in the market and these traders are aggressively offering the imported product to the consumers and therefore, with reduction in the prices either by the foreign producers or by these traders, either the Indian producers must realign their prices with the changes in the import prices or traders' resale prices, or the petitioners must loose orders. The domestic industry further contended that it decides its prices based on prices being reported in the trade journals for exports to India, inventory of the material at Kandla port. Thus, the domestic industry prices reflect the combined effect of the prices which have been reported in the trade journals and the prices that are being offered by the traders. There are no significant imports of the product under consideration from other countries. There is no viable substitute to this product. Demand for the product was showing increase and could not have been a factor responsible for price depression faced by the domestic industry. It is thus evident that the only factors responsible for the domestic industry prices are the import prices of the product from subject countries and the cost of production of the domestic industry. As the information shows, whereas the cost of production increased, the import prices much lower than the costs of the domestic industry depressed the prices of the subject goods produced by the domestic industry. Thus, the landed price of the subject goods from subject countries are major factors affecting the domestic industry prices.

#### ix. Growth

73. There was positive growth of the domestic industry in terms of sales and production. However, growth of the domestic industry in respect of profits, cash profit, and return on investment was significantly negative in the POI despite significant increase in demand. The domestic industry contended that with increase in capacity, the domestic industry had expected robust growth in profits, cash flow and increase in return on investments. However, the domestic industry was not able to achieve the same due to the presence of the dumped imports.

#### I. Conclusion on material injury

74. After examining the volume and price effects of imports of subject goods from subject countries and its impact on the domestic industry, it is noted that though there is an absolute increase in the volume of imports of subject goods from subject countries during

the injury period, the market share of the domestic industry in the total demand has increased during the injury period. After examining other volume parameters like sales, production and capacity utilization of the domestic industry, it is provisionally noted that the domestic industry has not suffered volume injury on account of dumped imports of subject goods from subject countries. However, with regard to price effect on account of imports of subject goods from subject countries, it is noted that imports of the subject goods from subject countries are significantly undercutting the prices of domestic industry. Further, the domestic industry has suffered price depression on account of imports of subject goods from subject countries. The domestic industry has also suffered price suppression on account of imports of product under consideration from subject countries as sales price of subject goods have declined while cost of production of subject goods have increased during the injury period. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, it is concluded that even though the performance of the domestic industry has improved in respect of production, capacity utilization, domestic sales, market share, the performance deteriorated in respect of profit, cash flow, return on investment, and inventories. The decline in profits, return on investment and cash flows is quite significant and material. Thus, the Authority provisionally concludes that the domestic industry has suffered material injury.

#### **J. Other Known Factors & Causal Link**

75. Having examined the existence of material injury, volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti-Dumping have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry.

#### **(a) Volume and prices of imports from third countries**

76. It is noted that imports of product under consideration from other countries are at higher price or are negligible in terms of volume. As regards imports from China PR as shown in the table, it is noted that the import price from China was much higher than import price from subject countries. Further, the volume of imports from China PR has shown declining trend, whereas volume of imports from each of the subject countries has shown rising trend.

Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Import Volume	MT	55,820	65,958	84,444	57,818
Subject Countries	MT	42,033	55,847	60,975	51,952
China	MT	10,561	5,384	16,084	2,631
Other Countries	MT	3,226	4,727	7,385	3,235
Share in Import Volume	%	100	100	100	100
Subject Countries	%	75.30	84.67	72.21	89.85
China	%	18.92	8.16	19.05	4.55
Other Countries	%	5.78	7.17	8.75	5.59



Import Price	Rs/Kg	24.25	36.67	37.90	25.65
Subject Countries	Rs/Kg	23.04	36.15	36.30	25.16
China	Rs/Kg	28.07	39.10	43.92	36.71
Other Countries	Rs/Kg	27.47	39.95	38.08	24.60

**(b) Contraction of demand and changes in the pattern of consumption.**

77. There has been a constant rise in demand of the product concerned throughout the injury period. Possible decline in demand is not as a possible reason of injury to the Domestic Industry.

**(c) Developments in technology:**

78. Technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, development in technology is not a factor causing injury to the domestic injury.

**(d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

79. There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the Domestic Industry.

**(e) Export performance of the domestic industry**

80. The exports of the domestic industry constitute an insignificant share in their total sales. However, it is added that the injury information examined by the Authority is for domestic operations and therefore possible decline in exports volume have not caused injury to the Domestic Industry.

**(f) Productivity of the Domestic Industry**

81. It is noted that the productivity of the domestic industry in terms of production per employee as well as production per day has increased over the period.
82. It is thus noted that listed known other factors do not show that the domestic industry could have suffered injury due to these other factors. The Authority examined whether the dumping of the product has caused injury to the domestic industry. The following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:
- The imports of subject goods from subject countries were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Resultantly, the domestic industry was forced to reduce its prices significantly. The price depression and price suppression suffered by the domestic industry is primarily because of dumping of the product in the Country.
  - The domestic industry was forced to reduce its prices even below cost of production

causing financial losses. The price depression caused by the imports thus resulted in significant deterioration in profits of the domestic industry to such an extent that the domestic industry suffered significant financial losses.

- c) Performance of the domestic industry with regard to profits, cash flow and return on investments deteriorated as a result of price depression. Thus, dumping of the product has led to deterioration in performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow and return on investments.

83. It is therefore, provisionally concluded that the domestic industry suffered material injury due to dumped imports.

#### **K. Magnitude of Injury Margin**

##### **Injury Margin**

84. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry determined has been compared with the landed value of the exports from the subject countries for determination of injury margin during POI. The injury margin determined are as under:-

<b><u>Injury Margin</u></b>		<b><u>Unit in US\$ per Kg</u></b>			
Country/exporter	Unit	EU		USA	Korea RP
		M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V. Netherlands.	Other Producers and Exporters	All producers and exporters	All producers and exporters
<b><u>Loose/Bulk</u></b>					
Non Injurious Price	US\$/kg	***	***	***	***
Landed Price	US\$/kg	***	***	***	***
Injury Margin	US\$/kg	***	***	***	***
Injury Margin %	%	***	***	***	***
Injury margin %	% Range	60-70%	85-95%	65-75%	30-40%
<b><u>Packed/Drum</u></b>					

Non Injurious Price	US\$/kg		***	***	***
Landed Price	US\$/kg		***	***	***
Injury Margin	US\$/kg		***	***	***
Injury Margin %	%		***	***	***
Injury margin %	% Range		70-80%	30-40%	40-50%
<b><u>Product under consideration as a whole</u></b>					
Non Injurious Price	US\$/kg	***	***	***	***
Landed Price	US\$/kg	***	***	***	***
Injury Margin	US\$/kg	***	***	***	***
Injury Margin %	%	***	***	***	***
Injury margin %	% Range	60-70%	80-90%	70-80%	30-40%

#### L. Indian industry's interest & other issues:

85. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the imposition of anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti dumping duties, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The Authority notes that the imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

#### M. Recommendation

86. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that:
- The product under consideration has been exported to India from the subject countries below normal values.

- b. The domestic industry has suffered material injury on account of subject imports from subject countries.
- c. The material injury has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject countries.

87. The Authority notes that the investigation was initiated and it was notified to all interested parties. Adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted a investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of duty is required to offset dumping causing injury. Domestic industry has requested for imposition of anti dumping duty to address injury being suffered. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury margin, the landed value of imports of product under consideration has been compared with the non-injurious price of the domestic like product produced by domestic industry determined for the period of investigation.

88. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty equal to the amount indicated in Column-8 of the table below is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

Duty Table

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
S N	Head ing / Sub-	Description of goods	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Amount	Unit	Currency
1	29031 2	Dichloro- methane (Methylene Chloride)	European Union	European Union	M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V, Netherlands.	M/s. Akzo Nobel Industrial Chemicals B.V, Netherlands.	0.32	Per Kg	US \$
2	- do -	- do -	European Union	European Union	Any other than combination at Sl. No. 1		0.36	Per Kg	US \$

3	- do -	- do -	Any other than subject countries	European Union	Any	Any	0.36	Per Kg	US \$
4	- do -	- do -	European Union	Any other than subject countries	Any	Any	0.36	Per Kg	US \$
5	- do -	- do -	United States of America	United States of America	Any	Any	0.33	Per Kg	US \$
6	- do -	- do -	Any other than subject countries	United States of America	Any	Any	0.33	Per Kg	US \$
7	- do -	- do -	United States of America	Any other than subject countries	Any	Any	0.33	Per Kg	US \$
8	- do -	- do -	Korea RP	Korea RP	Any	Any	0.21	Per Kg	US \$
9	- do -	- do -	Any other than subject countries	Korea RP	Any	Any	0.21	Per Kg	US \$
10	- do -	- do -	Korea RP	Any other than subject countries	Any	Any	0.21	Per Kg	US \$

#### N. Further Procedures

89. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings: -

- The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final finding. Interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

J. S. DEEPAK, Designated Authority